हिंदी विभाग

- अनुक्रमणिका -

कथा

❖ स्वतंत्रता दिन ११६

❖ पहचान ११७

❖ दयालु बुढ़िया ११८-११९

❖ शायरी १२१

कविता

❖ बेटियाँ / जमाना १२०

❖ मातृ भूमि / गुरू १२२

❖ हे परमपिता परमेश्वर १२३

स्वतंत्रता दिन

''जीएँ तो सदा उसी के लिए, यहीं अभिमान रहें, यहीं हर्ष,
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ।''

१५ अगस्त १९४७ यह दिन भारत देश के इतिहास में, स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है । इसी दिन भारतवासियों ने लाखों कुर्बानियाँ देकर ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की थी । इस वर्ष हम आजादी की ६५वी वर्ष गांठ मना रहे हैं । आज हम अपने महान राष्ट्रीय नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी श्रध्दांजली देते हैं । जिन्होंने विदेशी नियंत्रण से भारत को आजाद कराने के लिए अनेक बलिदान दिए और अपने प्राण न्यौछावर कर दिए ।

स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ का शुभारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ में किया और इस यज्ञ की पहली आहूति दी मंगल पांडे ने । कुछ ही समय में यह यज्ञ पूरे देश में आँधी की तरह फैल गया । अनेक योध्दाओं ने इस स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने रक्त की आहुति दी । 'सरफरोशी की तमन्ना' लिए रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, चन्द्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि देश के लिए शहीद हो गए। तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्मसिध्द अधिकार है' का उद्घोष किया, तो सुभाषचन्द्र बोस ने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' का मंत्र दिया । अहिंसा और असहयोग का अस्त्र लेकर महात्मा गांधी और लौह पुरुष सरदार पटेल ने गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया ।

प्रत्येक पर्व का जीवन में बहुत बड़ा महत्व होता हैं । आज का दिन हमे यह संदेश देता है कि, देश को धर्म-निरपेक्ष, प्रभुता संपन्न राष्ट्र का स्वरुप प्रदान किया हैं, इसलिए हमें इस पर्व की रक्षा के लिए सदैव कटिबद्ध रहना चाहिए, जिससे हमारा लोकतंत्र सदैव अमर रहें । इतिहास साक्षी हैं कि हमारे देश के वीरों ने हँसते-हँसते अपना बलिदान दिया ।

हमारी वर्तमान पिढी का यह कर्तव्य हैं, कि हमारे पूर्वजों के इस बलिदान को हम व्यर्थ ना जाने दे । अपने देश की अखण्डता, एकता बनाए रखने और उसकी सुरक्षा के लिए, हम सदैव तत्पर रहें ।

''जय हिंद ।''

श्रुति सु. भोसले
प्रथम वर्ष, बी.ए.

पहचान

सईद नि. हट्टीवळी

इन्सान की हर एक आदत, तरीका, रहना, सहना उसकी पहचान पर आधारित होता है । कई संतों ने और महापुरुषोने कहा है कि पहचान इन्सान के भावनाओं में छिपी होती है । भावनाओं से इन्सान के पहचान का संकेत मिलता है । इन्सान पहचान अपने आप से बनाता है । इन्सान को जिने देने वाला जरिया पहचान है । पहचान इन्सान की तभी होती है जब वह जिन्दगी में अनेक मनुष्यों से मिलता है । इस जरिये से इन्सान अपने आप को जानना चाहता है पहचान जीने और समझने की राह दिखाती है । इन्सान अपनी पहचान बहुत तरह से बनाता है ।

कई लोग अपनी पहचान अपने पैसों से बनाते है। ये लोग पैसों को अपनी पहचान समझते है और उन्नति भी । हरएक इन्सान और आदमी पैसों वालों इन्सानों को सिर्फ उनके पैसे से जानते है कि किसी आदमी के पास इतना पैसा है, अरे वह तो इस गाँव में सबसे अमीर है, ऐसा कहकर लोग उनकी पहचान अपने मन में बिठाते है । ऐसे इन्सानों की पहचान पहचान नहीं होती । इन लोगों की पहचान कुछ दिनों तक ही मशहूर रहती है । जब तक इन इन्सानों के पास पैसा है तब तक उसकी पहचान जागृत रहती है अगर पैसा नहीं तो पहचान भी नही ।

ऐसी पहचान, पहचान नहीं होती, ऐसी पहचान तो कुछ दिन, सालों या कुछ पल की मेहमान होती है । अगर इस तरह के इन्सान चले भी गए तो उसके साथ उसकी पहचान भी चली जाती है ।

बुराई इस दुनिया में बहुत लोंगों की पहचान बनाती है । इसे इन्सान जो किसी को डराए, किसी को धमकाए, किसी को पैसे देने पर मजबूर करे । इसे इन्सान की पहचान बुराई से शुरु होती है और बुराई पर ही खत्म। इन इन्सानों का हर एक रास्ता और पहचान का जरिया बुराई ही होता है । इन्हें लोग जानते तो है लेकिन जब ऐसे इन्सानों को लोग याद करते है तो मन मे घिन रखते है । बुराई इन्सानों के लिए दुनिया उनके मजे का डेरा होता है । लोग तो इन्हें जानते है लेकिन ये कहते है कि हाँ वह आदमी बहुत बुरा है, हाँ वह इन्सान धमकाता है । ऐसे इन्सानों को डराना और धमकाकर पहचान बनाना उनकी आदत होती है ।

ये पहचान भी वह पहचान नहीं है जो एक इन्सान को याद आ सके । ये पहचान भी क्या पहचान है जिसमें दुआएं के बजाए बद्दुआयें आती है ।

मेरे नजर में पहचान वह चिज का नाम है जिसमें प से इन्सान प्रयास करता हो, ह से दूसरों को हौसला देता हो, च से जो सबके लिए उसका मन चंचल हो, न से सबके साथ निष्ठा रखे वह पहचान, पहचान है । जैसे महान पुरुष महात्मा गांधी, भगत सिंह, लोकमान्य तिलक, स्वामी विवेकानंद आदी ऐसे लोगों की पहचान वह पहचान है जो सदियों याद रहने वाली है । जिनकी पहचान करने या करवाने की जरुरत नहीं रहती । इन के दिलो में कोई पैसों की पहचान नहीं होती ऐसे इन्सानों को बुराई क्या है यह पता भी नही रहता । ऐसे लोग सारों के दिलों में समा जाते हैं और उनको अपनी पहचान के लिए भटकना नहीं पडता । ये लोग जब मरते है तो अपनी उन्नति और पहचान पीछे छोड जाते है ।

इन लोगों की पहचान वह है जिससे लोगों का कतृत्व होता है । सच बात यह है की इन्सान कि पहचान उसके अच्छे कर्म और अच्छे आदतों से होती है । वह इन्सान की पहचान पहचान है जो उसे उसके जाने के बाद भी लोग उसे उम्र भर याद रखें । और उसकी मिठास दुनिया को प्रेरित करे ।

●

दयालु बुढ़िया

रति नाम की एक छोटी-सी लडकी अपने माता-पिता के साथ रहती थी । उसके पिता अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे । लेकिन रति की माँ सौतेली थी । उसका व्यवहार अक्सर रति के प्रति खराब होता । रति अपनी ओर से हर तरह की कोशीश करती कि उसकी माँ उससे खुश हो जाए, लेकिन जितनी वह उसे खुश करने की कोशिश करती उतनी ही उसकी माँ नाराज हो जाती।

एक दिन रति बहुत उदास थी । उसके साथ सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो रहा था । उसकी माँ ने उसे सिकते हुए केक को देखने को कहा था । जब केक पूरी तरह बेक सिक गया और वह केक को बाहर निकलने ही वाली थी तभी दरवाजे पर किसी ने खट-खट की । वह दरवाजा खोलने चली गई । इस बीच केक जल गया ।

उसकी माँ ने उसे दूध की कटोरी को मेज पर रखने को कहा । जैसे ही वह अंदर गई, बाहर से एक बिल्ली आकर दूध पी गई । वह दूध को देखती तभी एक कुत्ता आया और मेज पर रखी रोटी को उठाकर भाग गया । रति को कुछ समझ मे नहीं आ रहा था कि उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा है ? वह समझ गई कि आज उसकी सौतेली माँ उसे डाँटेगी ।

उसकी माँ ने उसे खूब डाँटा और घर से निकाल दिया और कहा जब तक वह पकी हुई चेरी लेकर नहीं आएगी, उसे घर में घुसने नही दिया जाएगा ।

अब बेचारी रति क्या करती? वह जानती थी कि यह चेरी का मौसम नहीं हैं । इस मौसम में कहीं भी पकी हुई चेरी मिलना संभव नहीं है । लेकिन उसके पास कोई रास्ता नहीं था । वह जंगल की ओर चल दी । तब तक चलती रही जब तक वह बुरी तरह थक नहीं गई । वह घर से काफी दूर निकल आई । उसे लगा कि वह भटक गई है । अब रति को डर लगने लगा । उसकी आँखों में आँसू आ गए ।

उसे प्यास भी लगी थी । उसने इधर-उधर देखा। दूर पेड़ों के बीच उसे एक कुआँ दिखाई दिया । वहीं उसे एक बाटली भी नजर आई । उसने कुँए से एक बाटली पानी निकाला और पानी पिया । तभी उसे एक आवाज सुनाई दी - ''सुनो बेटी, क्या तुम मेरा घडा भर दोगी?

रति ने आश्चर्य से इधर-उधर देखा, तो अपने पास ही उसे एक बेहद बीमार और गरीब-सी बुढिया दिखाई दी । उसका रंग पीला पड़ा हुआ था । उसके हाथ में एक मटका था । रति ने उससे कहा,'लाइए, अपना मटका मुझे दीजिए ।

यह कहकर रति ने कुएँ से पानी निकालकर मटका भर दिया । रति ने उससे पूछा, ''क्या आपका घर यहाँ से काफी दूर है?'' बुढिया ने हाँ कहने पर रति खुद उसका मटका उठाकर, उसके साथ उसके घर तक छोडने गई ।

घर पहुँचकर बुढिया ने एक बैग निकाला । उसे देते हुए कहा 'मैं बहुत गरीब हूँ । मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है । इसमें कुछ चीजें हैं । शायद ये कभी तुम्हारे काम आए ।'' रति ने उस छोटे-से बॅग को खोलकर देखा । उसमें नीले रंग के दो रिबन, एक गेंद, एक तेल की शीशी और एक गुलाब के फूल की जड थी । रति को समझ में नहीं आया कि ये चीजें उसके किस काम आ सकती हैं, लेकिन उसने बैग ले लिया ।

रति फिर जंगल में आगे की ओर चल दी । उसे घर की याद आ रही थी, लेकिन अब उसके लिए वापस जाना संभव नही था । जंगल में चलते-चलते उसे दूर, एक अजीब सा घर दिखाई दिया । रति उस घर के पास गई तो वह दंग रह गई । वह घर लकडी के एक पैर पर बराबर घूम रहा था । कुछ देर तक रति उस घर को देखती रही । वह सोचने लगी कि इस घुमते हुए घर में कौन रहता होगा ? उसने जोर से आवाज लगाई, ''कोई

है?''

अंदर से आवाज आई, ''कौन है?''

रति ने कहा, ''मैं हूँ रति । एक लकड़हारे की बेटी । आप कौन है ?

अंदर से फिर आवाज आई, ''अंदर आ जाओ ।''

रति घर के अंदर गई । घर में उसे एक बड़ा कुत्ता और एक बिल्ली दिखाई दिए । दोनों ही रति को घूर रहे थे। फिर रति की नजर एक चुडैल पर पड़ी चुडैल ने पूछा, 'तुम यहाँ कैसे आई?

रति ने जवाब दिया, 'मैं भटक गई हूँ । अगर मुझे यहाँ कुछ काम मिल जाए तो...।''

चुडैल ने कहा, 'हाँ, हाँ । तुम मेरे काले जादू में मेरी मदद कर सकती हो ।''

रति ने कहा, 'मैं किसी गलत काम में तुम्हारी मदद नहीं करुँगी । मुझे यहाँ नहीं रहना है ।''

चुडैल ने हँसते हुए जवाब दिया, 'अब तुम्हारा यहाँ से बाहर जाना असंभव है । और वह बाहर निकल गयी ।

रति ने बिल्ली से कहा कि वह उसे यहाँ से जाने में मदद करे । बिल्ली ने कहा, 'मेरे पास नीले रंग के रिबन नही हैं । यदि तुम मुझे निले रंग के रिबन दे दो तो मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ ।'

तभी रति को याद आया कि बुढिया ने उसे जो अनोखी चीजें दी थीं । उनमें से दो नीले रंग के रिबन थे। उसने फौरन वे दोनों रिबन निकाले और बिल्ली को दे दिए। बिल्ली खुश हो गई । बिल्ली ने कहा कुत्ते को भी खेलने के लिए कोई गेंद देनी होगी । तो रति ने वह गेंद कुत्ते को दे दी । कुत्ता खुश हो गया । अब रति की समस्या यह थी कि दरवाजा खुलते समय बहुत आवाज करता था । उसने तेल की शीशी निकाली और दरवाजे के कब्जों में तेल डाल दिया । इसके बाद दरवाजा खोलकर रति वहाँ से भाग निकली ।

चुडैल वापस आई तो रति को वहाँ न देखकर बहुत गुस्सा हुई । वह रति के पीछे भागी । रति के पास चुडैल से बचने के लिए, गुलाब के फूल की एक गाँठ बची थी । तभी वह गाँठ, काँटों की बड़ी-बड़ी झाड़ियों में बदल गई और चुडैल उसमें फँस गई ।

अब रति को पीछे कोई नहीं था । कुछ दूर चलने पर रति को एक जगह, पकी हुई चेरी के पेड़ दिखाई दिए। वह खुश होकर चेरी तोडने लगी ।

तभी पेड का मालिक बुडमैन वहाँ आ गया । रति ने उसे अपनी सौतेली माँ के बारे में बताया ।

वुडमैन ने रति को बहुत सारी पकी चेरियाँ दी । उसे घर तक छोड़ने के लिए आया । रति की सौतेली माँ से उसने कहा, 'रति दयालु और अच्छी लड़की है । तुम्हीं इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिए ।'

रति की सौतेली माँ को अपनी गलती महसूस हुई। उसने रति को गले लगाया और खूब प्यार किया । और उसने वादा किया कि अब वह रति को कभी तंग नहीं करेगी ।

प्रियांका किंजाळे

बेटियाँ

बेटी बनकर आयी हूँ

माँ-बाप के जीवन में

बसेरा होगा मेरा कल

किसी और के आँगन में

क्यों यह रीत भगवान ने बनायी होगी ?

कहते हैं, आज नहीं

तो कल तू परायी होगी ।

देकर जनम पाल-पोसकर

जिसने हमें बडा किया,

और वक्त आया तो

उन्हीं हाथों ने हमें विदा किया

टूट के बिखर जाती हैं

हमारी जिंदगी वही,

पर फिर भी उस बंधन में

प्यार मिले जरुरी तो नहीं......

क्यों रिश्ता हमारा

इतना अजीब होता है ?

क्या बस यही हम बेटियों

का नसीब होता है ?

दीपाली जल्मी
तृतीय वर्ष

जमाना

जब आँख खुली तो सवेरा होता है ।
दिन भर इन सूरज के किरणों को झेलता है ।
इस दिन भर को आजमाता हूँ

न जाने इस जमाने में कौन रोता है
कोई अपने बाप तो कोई अपने माँ को पिटता है,
कोई दूसरों का दुःख देखकर हँसता है
तो कोई फरिश्ता बनकर उनका दुःख आनंद करता है ।

यह जमाना बहुत बुरी राह पर ठहरा है
न जानें अच्छाई कहाँ छुपा कर रखा है,
इस जमाने को बुराई ने गन्दा बनाया
न जाने इन्सान इन में क्यों समाया ।

इस जमाने को अपने हाथों से सजाओं
वन्दे मातरम् को अपने दिल में बसाओ,
दिल को दिल से मिलाओ
अपने पहचान से इस जमाने को आगे बढाओ ।

सईद नि. हट्टीवळी

शायरी

रात के अँधेरे में कही खो गया है सूरज का उजाला,
पंछी चले अपने घोसले में भूल गये दिन की थकान,
हमने भी बना लिया रात को अपना हमसफर,
अब ढूँढ रहे हैं अपने चेहरे की मुस्कान ।

रोने से किसी को पाया नहीं जाता,
खोने से किसी को भुलाया नहीं जाता,
वक्त सबको मिलता है जिन्दगी बदलने के लिए,
पर जिन्दगी नहीं मिलती वक्त बदलने के लिए ।

जिन्दगी एक चाहत का सिलसिला है,
कोई मिल जाता है, कोई बिछड जाता है,
जिसे माँगते है हम अपनी दुआओं में,
वो किसी को बीना माँगे ही मिल जाता है ।

खुशी को ढूँढने से गम मिलता है,
ये गम जिन्दगी में हर दम मिलता है,
जो दिल के सारे दर्द बाँट ले,
ऐसा दोस्त जिन्दगी मे कम मिलता है ।

गुस्सा उस मोमबत्ती की तरह होता है
जहाँ दोनों तरफ आग लगी हो,
लगता है रोशनी देगी
लेकिन जलता हमारा हाथ ही है ।

पहाड़ चढ़ने का भी एक ऊसूल होता है,
झुक के चलो और दौडो मत
जिन्दगी भी सिर्फ इतना ही माँगती है ।

गुस्सा और जोश एक ही है
खून की रफतार तेज़ हो जाना
लेकिन इनमें सिर्फ एक ही फर्क है
एक पत्थर है तो एक मिल का पत्थर है ।

उन्हें चाहना हमारी कमजोरी है,
उनसे कह नदी पाना हमारी मजबूरी है,
वो क्यूं नहीं समझते हमारी खामोशी को,
क्या प्यार का इजहार करना जरुरी है ।

दोस्ती धड़कती है हर एक के दिल में,
सही और गलत के पार,
अगर सही को पहचान लिया तो,
जिन्दगी भी धड़कने लगती है ।

दोस्ती हमारी मिटा ना देना,
हम दोस्त है आपके भुला ना देना,
हम दूर होके भी हमेशा पास रहेंगे,
हमारी जगह किसी और को ना देना ।

लोग हम मोड़ पर रुक रुक के सम्भलते क्यों है ?
जो डरते है तो घर से निकलते क्यों है
कमज़ोर जब ठोकर खाता है,
तो लोग हँसते क्यों है,
ध्यान से सुनलो कमजोर समझने वालों
हम अपनी ठोकर पर सारा जहान रखते है ।

ये आँखे नम क्यों है
ये दिल गुमसुम क्यों है
जिसे
कभी पाया ही नहीं,
उसे खोने का गम क्यों है

तसवीर आपकी जो दिल मे बसी है,
सांसे हमारी जो आपसे जुड़ी है,
दिल ना तोडना तस्वीर टूट जाएँगी
सांसे ना रोकना हमारी जान चली जाएँगी ।

पूजा विश्वकर्मा
द्वितीय वर्ष, विज्ञान, अ

मातृ भूमि

इस दुनिया का सौंदर्य का अंदाज
यही है भूमि का राज,
भूमि नमन कर के बोले
हर दु:ख अपने आप झेले ।

अंग पे स्थर ना पहने
फिर भी जीवन को सुंदर लगे,
भूमि तेरा है ए उजाला
मैं लिखता हूँ तेरी मधुशाला ।

भूमि में समा रहे है वृक्ष
न जाने कौन काटता है इसे हार,
भूमि की अलग ही बात है हरयाली
कर देती है सबको निराली ।

ऐ भूमि के रात के सितारे
आसमान में होकर भी पास हमारे,
भूमि का वातावरण संभाले दुनिया
वरना हो जाएगा जीवन को निमोनिया ।

भूमि की यह धूप
कर देती है सबके अनेक रुप,
आज भूमि का सौंदर्य कहीं
जिसे समझने वाला कोई नहीं ।

भूमि का है नाम महान
में करता हूँ उसको प्रणाम
भूमि तुम्हारे हाथ में है संभालकर रखो वही
वरना सौंदर्य के बिना मातृ भूमि कुछ भी नही ।

सईद नि. हट्टीवळी

गुरु

गुरु ही मंदिर, गुरु ही पूजा,
गुरु मेरा भगवान
गुरु पर कर दूँ सब कुर्बान
सबसे ऊँची उनकी शान
उनपर वारु मेरा प्राण

कभी शोला कभी शबनम
पाठशाला उनका है गुलशन
करले जो उनका दर्शन
करदे वो सब अर्पण

हमें पढ़ाते हमें सिखाते
एक सच्चा इनसान बनाते
उन्हीं से मेरी है पहचान
उन पे वारु मेरा प्राण

हे परमपिता परमेश्वर

सुष्टि के हे रचनाकर परमपिता परमेश्वर
आपने दिया हमें बहुत कुछ अप को शत शत प्रणाम

तू ही है हमाराकर्ता तूही हमारा धर्ता
आपके वजह से ही तो जीवित है यह मानवता

आपमे है ना कोई लोभ न कोई स्वार्थ माया
हर भक्त जो मन से करे पूजा सदा रहे उसपर आपकी छत्र-छाया ।

पर क्या आपके भक्तों है आपकी तरह साफ काया
बताता हूँ मैं आपको उनकी माया

यूँ तो मंदिर में दिन का भजन गाते हैं ।
रात को गंदी-गंदी गालियाँ देते है ।

हर वक्त पैसों के पीछे भागते है
जब मुसीबत होती है तभी आप याद आते है ।

आते है मंदिर में लेकर साफ काया ।
पर होते हैं मन में इनके लोभ, मत्सर, और माया ।

मंदिर में जाते ही बजाते है घंटी
और हो जाती है भंग बाकी लोगों की शांति ।

देखते ही भगवान को याद करते है क्या मांगे उन से ।
जानते हैं सब कुछ फिर भी रिश्वत देते है शान से ।

जिस भगवान ने कभी नहीं लिया अपने जीवन में मिठे अमृत का घूँट
उस ये पहनाते है सोने चांदी का मुकुट ।

आता है चढावे में आपके हजार, करोड
और उसमे भी होता है भ्रष्टाचार सवा लाख करोड ।

कई नेता भी आते हैं आपके द्वार
मांगने माफी उस गलती की जो कर रहे है बार बार ।

और क्या आप नहीं देते उनको उपहार
जिससे करते है ये गरीबो पर अत्याचार पर अत्याचार ।

क्या यही है कलीयुग का अवतार
जिससे फैल रहा हर जगह अंधकार ।

हे परमपिता परमेश्वर हे सृष्टि के रचनाकार
संभालो अपनी धरती का बढता हुआ दुराचार ।

नही तो एक दिन ऐसा जरुर आयेगा और
- मानव ही भगवान बन जायेगा
- मानव ही भगवान बन जायेगा ।
- मानव ही भगवान बन जायेगा ।

सचिन डी. नाईक
प्रथम वर्ष, बी. ए. ब

मराठी विभाग

- अनुक्रमणिका -

गद्य विभाग

- ❖ आई १२६
- ❖ जीवन १२७-१२८
- ❖ निंदकाचे घर असावे शेजारी १२९
- ❖ आजचा विद्यार्थी - ज्ञानार्थी की परीक्षार्थी १३०-१३१
- ❖ ते प्रेम आता आटले १३२-१३४
- ❖ उद्ध्वस्त कादंबरीतील उद्ध्वस्त गोवा १३५-१३६
- ❖ निसर्गरम्य गोवा १३७
- ❖ कला..... .... १३८

पद्य विभाग

- ❖ निळी पक्षीण १२९
- ❖ झाड...... .... १३४
- ❖ तिघी १३६
- ❖ आमचा वड १३८
- ❖ कविता/वादळ १३९
- ❖ उद्ध्वस्त गाव /स्वातंत्र्य अन् भ्रष्टाचार १४०
- ❖ जीवन कणाकणाने घडे / आठवणी १४१

आई

मला असं वाटतं की या जगात एक आई ही खूप श्रेष्ठ व्यक्ती असते. जगात असा एकही माणूस नाही जो आपल्या स्वार्थाशिवाय काम करत नाही, पण आई आपल्या मुलाला वाढविण्यासाठी कोणताही स्वार्थ करत नाही. गरीबातली गरीब आई आपल्या मुलाला चांगले संस्कार देण्यासाठी धडपड करते. एका मुलाला चांगले नागरिक करायला त्याच्या शिक्षकांचाच नव्हे तर आई-वडीलांचाही वाटा असतो. आई मुलाला चालायला-बोलायला शिकवते. मूल जेव्हा बोलते तेव्हा त्याच्या तोंडून पहिला शब्द आईच येतो. त्याला जेव्हा ठेच लागते तेव्हा ही ते 'आईऽग' म्हणून विव्हळते. शाळेत जाताना सुध्दा त्याला आईच बरोबर लागते.

पुढे मुलगा किंवा मुलगी कॉलेजात जाते तेव्हा आईची काळजी आणखीनच वाढते. त्यांचे फॅशनेबल कपडे, पुस्तके, पॉकेटमनी, त्यांचे बॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड सगळे आईलाच पहावे लागते. जी मुले समजूतदार असतात ती असले काहीही न करता फक्त शिक्षणात प्रगती करतात आणि आईची मान उंचावतात. असली प्रकरणे ऐकून त्या माऊलीला किती दु:ख होत असेल. परंतु आई आपल्या मुलाचे सगळे अपराध पोटात घालून त्याला क्षमा करते. ज्या मुलांत जन्मत: दोष असतो त्या मुलांत आई कधीही भेदभाव करत नाही. परंतु त्यांच्यावर अधिक माया करते.

आजची पिढी मात्र एकदम निर्दयी आणि स्वार्थी आहे. कारण जेव्हा एक मुलगा किंवा मुलगी शिकून आपल्या पायावर उभी राहते तेव्हा त्यांचे एकच ध्येय असले पाहिजे की आपल्या आई-वडिलांची सेवा करावी. त्यांची सगळी स्वप्नं पूर्ण करायची पण प्रत्यक्षात असे क्वचितच घडते. मोठी झाल्यावर त्यांना आपले आई-वडील आवडेनासे होतात, त्यांची लाज वाटते. त्यांच्याशी भांडतात व अनेकदा आपल्या आईवर हात उगारायला सुध्दा मागेपुढे पहात नाहीत. आई-वडील म्हणजे त्यांना ओझे वाटते. परिणामस्वरुप त्यांना 'वृध्दाश्रमा'त पाठवले जाते. ज्या आईने आपल्यावर इतकी माया केली, आपल्यासाठी इतके कष्ट घेतले त्यांना वृध्दाश्रमात पाठवायला त्यांना काहीही कसे वाटत नाही ? मुले इतकी कठोर कशी बनू शकतात ?

आपली आई श्रेष्ठ असतेच. परंतु तिच्या ममतेचा आदर करणे हे आमचे कर्तव्य आहे. खरंच आई 'थोर तुझे उपकार.'

दिपाली दि. कामत
कला शाखा, द्वितीय सत्र

जीवन

खरंच निसर्गरम्य अशा या सुंदर जगात आपला जन्म म्हणजे एक वेगळाच अनुभव. खरं म्हणजे ईश्वराचे आपण आभारच मानायला हवेत, कारण त्याने जर आम्हाला या जगात पाठवलेच नसते, तर आपल्याला या सुंदर जगाचा उपभोग घेता आला नसता. परंतु काहीजण म्हणतात की, हे कसलं जीवन? मी तर जन्मापासूनच दु:ख भोगत आहे, हे जीवन म्हणजे काय जीवन आहे? असल्या जीवनाला कुणी जीवन म्हणायचं?

खरं सांगायचं झाल्यास माणसाचं जीवन हे अनेक बिल्वदलांनी भरलेलं आहे. बालपण, तारुण्य, म्हातारपण ही त्यातील एक एक पाने आहेत. जीवन म्हणजे अनुभवाचं एक गाठोडं आहे. जीवन म्हणजे अळूच्या पानावरच्या थेंबासारखं आहे, जो कधी पडता पडता वांचतो, तर कधी वांचता वांचता पडतो. जीवन म्हणजे या विशाल विश्वाच्या रंगमंचावरील एक नाटक आहे. जीवन म्हणजे एक संघर्ष आहे. अशा या संघर्षमय जीवनात आपण आपल्या सहप्रवाशाबरोबर चालत असतो. आपल्याला आलेले अनुभव घेत असतो किंवा पुन्हा पुन्हा त्याच त्याच चुका करत राहतो.

परंतु खरंच का जीवन एवढंच आहे, की त्यापलीकडे आणखी काय आहे ? असा प्रश्न जेव्हा मनाला पडतो तेव्हा असंख्य विचार मनात उलट पालट करत असतात.

'अरे जगणं मरणं एका श्वासाचे अंतर' असे बहिणाबाईंनी म्हटले आहे ते खरेच आहे. जीवन म्हणजे जन्म आणि मरण ह्यामधला मोजकाच काळ. ह्या काळामध्ये या जगात पदार्पण करून आपण काय काय कमावले व काय काय गमावले ह्याचा हिशोब असतो. आपल्यातील पापपुण्याची गणती असते आणि ह्याच गणतीवर आपला पुढचा जन्म ठरलेला असतो, असे काही जाणकार सांगतात.

माणसानं कशा पद्धतीने जगावं हे प्रत्येकानं ठरवावं, परंतु माणसानं आपला धर्म मात्र जरूर जोपासावा. आपली संस्कृती जरूर सांभाळावी. आपल्या माणुसकीला अनुसरून माणसानं जगावं, जसा साखरेतील गोडवा काढला तर साखर, साखर उरणार नाही, जसा मिठातील खारटपणा काढला तर मीठ, मीठ उरणार नाही, जसा मिरचीतील तिखटपणा काढला तर मिरची, मिरची रहाणार नाही, तशीच माणसातील माणुसकी काढली तर माणूस, माणूस रहाणार नाही.

माणूस - माणुसकी = शून्य

आज आपला भारत देश एक प्रगतीशील देश म्हणून गणला जातो. माणूस झपाट्याने प्रगतीच्या दिशेने धावत आहे. सगळ्याच बाजूनी आपण प्रगतीशील होत चाललो आहोत. परंतु, खरंच का आपण एवढे पुढे गेलो आहोत? हा प्रश्न जेव्हा मनाला पडतो तेव्हा कुठे तरी मळमळल्यासारखे होते. आपण जर सूक्ष्मपणे आपल्याला न्याहाळून बघितले, तर आपल्याला आपलंच प्रतिबिंब एका भयाण कसायाप्रमाणे भासणार. कारण आज आपण प्रगतीच्या दिशेने नव्हे तर एकमेकांना खेचून खाली पाडून पैशाच्या दिशेने धावत आहोत.

आज माणूस स्वार्थी होत चालला आहे. माणसांमाणसांमधील प्रेम आज नष्ट होत चाललं आहे. माणूस आपली नाती-गोती सारं सारं विसरला आहे. पती पत्नीचा द्वेष करतो आहे. मुलगा आपल्या कर्तव्याला पाठ करून आई वडिलांना दूर लोटतो आहे. भाऊ बहिणीला ओळखत नाही. आज स्त्रियांना स्वातंत्र्य मिळाले

आहे. ह्या उलट पतीचा संशय जास्त वाढला आहे. ह्याचा अर्थ असा की एवढे स्वातंत्र्य मिळूनसुध्दा आम्ही अजूनही होतो त्याच जागेवर आहोत.

आपल्या ह्या जीवनात काहीतरी असले पहिजे असं नाही का वाटत कुणाला? आपल्याला आपल्या जीवनात एक आत्मसन्मान, आत्मविश्वास हवा असं वाटत नाही का? मी ह्या जगात क्षूद्र होऊन जगण्यासाठी नाही आलो. बैलांसारखाही मी जगणार नाही. मला माझा आत्मसन्मान, आत्मविश्वास सांभाळायचा आहे. कारण आत्मसन्मान, आत्मविश्वास हरवलेला 'माणूस, सुख, शांती, समाधान, मुक्ती, भक्ती यांपासून वंचित राहतो. आपलं जीवन संस्कारमय असलं पाहिजे. संस्कार म्हणजे काय? चांगले विचार मनावर बिंबवून जीवनाला योग्य आकार देऊ शकतात ते संस्कार.

लहानपणी मूल अनुकरणाने शिकते. जसे जसे ते मोठे होत जाते तसे तसे ते अनुभवाने शिकते. अनुकरण आणि अनुभव हे आपल्या आयुष्यातील महत्वाचे घटक आहेत. त्यापेक्षाही जास्त महत्त्वाचे घटक म्हणजे संस्कार होय. अगदी लहानपणी आपल्यावर झालेले संस्कार माणूस कधीच विसरत नसतो. संस्कार म्हणजे सुविचारांनी कोरलेला एक दगड. तो फुटला तरी त्याचा कोरीवपणा जाणार नाही. असे हे संस्कार कधी कधी कळत नकळत आपल्या आई-वडिलांकडून, शेजाऱ्यांकडून शिक्षकांकडून आणि आपल्या आजी-आजोबांकडून आपल्यालाही प्रत्यक्षात अनुभवायला मिळतात.

जिजामातेने शिवबावर लहानपणी केलेल्या संस्कारांमुळेच तर शिवबा एवढा मोठा शूर छत्रपती झाला. साने गुरुजी तर आपल्या आईचे संस्कार घेऊनच एवढे मोठे लेखक झाले. त्यांचे जीवन म्हणजेच त्यांची आई आणि त्यांची आई म्हणजेच त्यांचे सर्वस्व. आपल्या देशाचे बापूजी महात्मा गांधीसुध्दा आपल्या आई वडिलांच्या दिव्य संस्कारांमुळे एवढे महान झाले. त्यानी कधीच ब्रिटिशांचा द्वेष केला नाही. त्यांचं जीवन म्हणजे सत्कर्म व सद्‌गुणांनी भरलेलं जीवन होतं. त्यांच्याकडे नम्रता होती म्हणूनच ते रामासारखे जीवन जगले. रामाने रावणाचा द्वेष कधीच केला नाही. जर रामाने रावणाचा द्वेष केला असता, तर रावणाचा दहनविधी त्याने केलाच नसता. नारदाने सुध्दा वाल्याचा जर द्वेष केला असता तर वाल्याचा वाल्मिकी झालाच नसता.

आपलं जीवन म्हणजे एक शिल्प आहे. ह्या शिल्पाला सुसंस्कारी पैलू पाडा त्याला सुंदर आकार द्या आणि आत्मसुख मिळवा. कारण चौऱ्याऐंशी लाख योनींनंतर मिळालेला हा माणसाचा अमूल्य देह म्हणजे हजारो अणूंचा समुदाय आहे. त्यातील थोडीशी शक्ती जरी माणसाने वापरली तर माणूस पुष्कळ काही करू शकतो. म्हणूनच अर्थशून्य जीवन कधीही जगू नका. अर्थशून्य जीवन म्हणजे खाचखळगे नसलेलीगुळगुळीत गोटा आहे.

पूजा विश्वकर्मा
विज्ञान, चतुर्थ सत्र

निंदकाचे घर असावे शेजारी

निंदकाचे घर असावे शेजारी या ओळीतून संत तुकाराम असे स्पष्ट करतात की, आपल्या चुका दृष्टीस आणून देणारा आपल्या आजूबाजूला असल्यास आपले आयुष्य नक्कीच सुखी होईल.

असं म्हणतात की माणूस चुकांतून शिकत जातो परंतु जर चुका दाखवून देणाराच कोणी नसेल तर आपण सदोदीत ह्याच भ्रमात राहू की, आपण जे करतोय ते अगदी योग्य करतोय. काही माणसे एवढी निर्लज्ज असतात की त्यांना त्यांच्या चुका दाखवून देऊनसुध्दा त्यांच्या वागणुकीत काडीमात्र फरक पडत नाही. परंतु ज्यांना आयुष्यात यशस्वी व्हायचे असते त्यांना त्यांची चूक दाखवून दिल्यास ते पुन्हा त्या मार्गाने न जाता सन्मार्गाने जाऊन आपले जीवन यशस्वी करतात.

आजच्या काळात आपण एखादी जरी चूक केली तर आपल्या यशाचा मार्ग नक्कीच खुंटला जाईल आणि म्हणूनच आपल्याला योग्य मार्ग दाखविण्यास आपल्या आसपास एखादा तरी निंदक असणे गरजेचे आहे. त्याने दाखवून दिलेल्या चुका आपल्याला उमजल्यास आपण स्वत:ला सुधारून परिपूर्ण बनवू शकतो. त्याने केलेल्या टीकांकडे दुर्लक्ष करून अथवा त्यालाच उलट चार शब्द सुनावण्यापेक्षा त्याच्या बोलण्यात किती तथ्य आहे हे समजून घ्यावे. तो जे काही सांगतोय ते आपल्या भल्यासाठीच सांगतोय याची खात्री ठेवावी. त्याने केलेल्या टीकांमुळे खचून न जाता त्या सुधारण्याचा आटोकाट प्रयत्न करावा. आपण एखादे चांगले कार्य केल्यास त्याचं कौतुक सर्वच करतात परंतु एखादे वाईट कृत्य हातून घडल्यास आपली चूक कोणीही उघडपणे दाखवून देत नाही. उलट आपल्या पाठीमागे त्यावर चर्चा करतात. परंतु जर आपल्या सभोवताली आपला एखादा निंदक असेल तर त्याचा आपल्याला नक्कीच उपयोग होतो, ज्याच्यामुळे आपले व्यक्तिमत्व सुधारून आपले जीवन आपण यशस्वी करू शकतो.

'परिक्रमा'मधून

शांभवी घैसास

निळी पक्षिणी

स्वप्नील सुंदर नगराची राणी
होती एक निळी पक्षिणी
हिरव्या महाली पाचूंच्या वेली
वेलींवर फुले फुललेली
माणकांच्या फुलात, फुलांच्या गंधात
फिरत होती निळी पक्षिणी.......

सूर्यकिरणांच्या गालिच्यावरून
चंदेरी चमचम तुरा खोवून
पिसांची पांढरी झालर लेवून
ऐटीत येई निळी पक्षिणी....

न्याय तिचा खराखुरा
येवो तुफान येवो वारा
पावसाच्या सरी छेडून गेल्या
घाबरायची नाही निळी पक्षिणी......

प्रियंका किंजळे
कला शाखा, द्वितीय वर्ष

आजचा विद्यार्थी - ज्ञानार्थी की परीक्षार्थी ?

आजचा विद्यार्थी हा आपल्या स्वतंत्र लोकशाही राष्ट्राचा भावी नागरिक आहे. वयाच्या अठराव्या वर्षीच त्याला मतदानाचा अधिकार मिळाला आहे म्हणून विद्यार्थी दशेतच त्याच्या व्यक्तिमत्वाचा योग्य विकास होणे आवश्यक आहे. त्याला स्वतंत्रपणे निर्णय घेता आला पाहिजे. कोणत्याही समस्येबाबत त्याला निरपेक्ष, तर्कसंगत विचार करता आला पाहिजे. त्यांची आपल्या देशावर नितांत निष्ठा हवी. आजचे शिक्षण अशा प्रकारचे नागरिक तयार करू शकत आहे का? या प्रश्नाला छातीठोकपणे 'हो' अस उत्तर देऊ शकत नाही. कारण आजची विद्यालये, महाविद्यालये, विद्यार्थ्यांचे व्यक्तिमत्व फुलवत नाहीत, तर केवळ परीक्षांच्या कारखान्यातून बेकारांच्या झुंडी निर्माण करत आहेत.

आज लहान मुलांच्या जीवनातील आनंद ओरबडून घेणारी बाब असेल तर ती म्हणजे 'परीक्षा' होय. एखाद्या नावाजलेल्या शाळेतील पूर्व प्राथमिक शाळेत प्रवेश मिळवण्यासाठी अडीच-तीन वर्षाच्या बाळालाही परीक्षेला तोंड द्यावे लागते. खरे पाहता लहान मुले घरातल्यांना निरागसपणे कितीतरी प्रश्न विचारत असतात तेव्हा ती 'ज्ञानार्थी' असतात पण मोठी माणसे त्यांना 'परीक्षार्थी' बनवत असतात. शाळेतील महाविद्यालयातील मुले परीक्षेत उत्तम गुण मिळवण्यासाठी धडपडत असतात. त्यामुळे विद्यार्थ्यांची ज्ञानाशी फारकत होते. आजकाल मोठ्या सुट्टीतही खास वर्गाचे अभ्यासक्रम विद्यार्थ्यांवर लादले जातात. मग त्यांनी स्वत:ला आवडेल ते वाचावे केव्हा? ज्ञान संपादन करून बहुश्रुत व्हावे कसे? ही सर्व जीवघेणी धडपड पदव्यांच्या मुंगळ्या मिळवण्यासाठी असते, पण पदवी मिळाली म्हणजे नोकरीची शाश्वती असतेच असे नाही.

आज भारतात कोट्यावधी माणसे-सुशिक्षित, अशिक्षित कुशल, अकुशल, कारागीर, स्त्री, पुरुष बेकार आहेत. उद्योग, नोकरी, कामधंदा करण्याची इच्छा असूनही त्यांच्या पदरी निराशा येते एकेकाळी असा समज होता की शिक्षण घेतले तर आपल्याला नोकरी मिळेल, पण आज काय दिसते? लक्षावधी सुशिक्षित, पदवीधर बेकार आहेत. असे का? याचे उत्तर सतत वाढत जाणारी आपली लोकसंख्या हे आहे. स्वातंत्र्यानंतर शिकणाऱ्याचे प्रमाण वाढले आणि शिक्षण पूर्ण झाल्यावर सर्वांची अपेक्षा असते ती म्हणजे आपल्याला नोकरी मिळाली म्हणजे महिन्याच्या महिन्याला निश्चित पगार! पण सुशिक्षितांच्या तुलनेत नोकऱ्यांची संख्या अल्प आहे. त्यामुळे बेकारांची संख्या सतत वाढत चालली आहे ''विद्या परम दैवतम' असे विद्यार्थी सुभाषितात शिकतो, पण त्या देवताशी त्याचा धड परिचयही होत नाही. शील, चारित्र्य, नीती, प्रगती यांचे संवर्धन विद्येमुळे होते म्हणून क्षणशः कणशः ती संपादन करावी. 'ज्ञान हा तिसरा डोळा' हे सारे तो ग्रंथातून वाचतो पण त्याला काय आढळते ? ज्ञानमंदिरे ही भ्रष्टाचारांनी बरवटलेली आहेत. पैसे टाकून पदव्या घेतल्या जातात. हजारो रुपये चारून प्रश्न पत्रिका फोडल्या जातात. अशा वेळी या विद्यार्थ्यांच्या वाट्याला केवळ दारूण निराशा येते. परीक्षेला आलेल्या अवास्तव महत्वामुळे हे घडते.

विद्यार्थ्यांमधील असंतोषाचे दर्शन घडवणाऱ्या बातम्या वृत्तपत्रात वारंवार येत असतात. 'विद्यार्थ्यांचा विद्यापीठावर मोर्चा' 'विद्यार्थ्यांचा कुलगुरूंना घेराव', 'विद्यापीठाच्या निर्णयावर चिडून विद्यार्थ्यांकडून जाळपोळ', अशा एक ना दोन आणि त्या वाचून मग वडिलधारी माणसे कुरकुरतात. काय ही विद्यार्थ्यातील बेशिस्त! हे कसले विद्यार्थी? हे तर निव्वळ गुंड आहेत, गुंड! खरे म्हणजे जुन्या पिढीतील लोकांना आजच्या विद्यार्थ्यांचे

सगळेच वागणे गैर वाटते. एकूण आजचा विद्यार्थी हा फार बेशिस्त आहे. पार बिघडून गेला आहे असे त्यांचे म्हणणे आहे. हा विद्यार्थी जेव्हा आंदोलन उभारतो तेव्हा तर त्याच्या बेशिस्तपणाचा कळसच होतो असे टिकाकारांना वाटते पण कोणी असा विचार कधीच करत नाहीत की, विद्यार्थी शिस्त का मोडतात? त्याला काही अशी विद्यार्थ्यांशी संबंधित अशी ही मोठी माणसेच जबाबदार नाहीत का? काही दिवसांपूर्वी विद्यार्थ्यांचा एक मोर्चा निघाला होता, कशासाठी ? काय मागणी होती त्यांची तर 'आमच्या परीक्षा वेळेवर घ्या. आता ही अशी मागणी करणारे विद्यार्थी बेशिस्त कसे? महाविद्यालये विद्यार्थ्यांकडून भरभक्कम फी घेतात, पण त्याच्या मोबदल्यात विद्यार्थ्यांना योग्य प्रकारे शिक्षण दिले जाते का? कित्येकदा प्रश्नपत्रिकेतील प्रश्न हे अभ्यासक्रमाच्या बाहेरील असतात. म्हणून मग विद्यार्थी प्रश्नपत्रिकांची होळी करतात. कित्येकवेळा परीक्षा होऊन चार-चार महिने लोटले, तरी परीक्षांचे निकाल लागत नाहीत, मग विद्यार्थी अस्वस्थ होतात, अशा वेळी त्यांच्यावर बेशिस्त वर्तनाचा ठपका ठेवला तर ते त्यांच्यावर अन्याय करण्यासारखे नाही का? आजचा विद्यार्थी हा अधिक प्रगल्भ आहे, कर्तबगार आहे. विचारवंत आहे, महत्वाकांक्षी आहे, आपल्या हक्काविषयी तो फार जागृत आहे, तो आपल्याला न्याय मिळण्यासाठी मोर्चे, घेराव, संप हे मार्ग अनुसरतो, खरे पाहता आजचा विद्यार्थी बेशिस्त नाही, बेशिस्त आहे तो आजचा समाज!

आजचा समाज हा विद्यार्थ्यांना ज्ञानार्थी बनवण्याच्या नादात परिक्षार्थी बनवत चालला आहे. आजच्या विद्यार्थ्याला शालेय शिक्षणाबरोबरच लोकशिक्षण, व्यवसाय शिक्षण घेणे जरुरी आहे. त्याकरता येथील शिक्षणपध्दती बदलली पाहिजे. आजचा युवावर्ग म्हणजे उद्याच्या पिढीचा भावी नागरिक! या नात्याने विद्यार्थ्याला आपल्या कर्तव्याची जाणीव हवी. त्यासाठी लोकशिक्षणाचीही मोठ्या प्रमाणावर आवश्यकता आहे कारण आपल्या देशात लोकशाही आहे. लोकशाही म्हणजे जनतेने जनतेसाठी चालवलेले राज्य होय. भारतासारख्या विशाल देशात लोकशाही राज्यपध्दती यशस्वीपणे आपण राबवतो याचा आम्हाला मोठा अभिमान वाटतो मात्र आज भारतात लोक शिक्षणाची नितांत गरज आहे. आजच्या समाजात विद्यार्थ्यांना सर्वांगाने विकसीत करणे जरुरी आहे. शालेय शिक्षणाबरोबरच त्यांच्याकडे व्यावसायिक शिक्षणसुध्दा हवे. दरवर्षी जून-जुलै महिने आले की, विविध परीक्षांचे निकाल जाहीर होतात. हजारो पदवीधर निर्माण होतात, लाखो विद्यार्थी उत्तीर्ण होतात पण यातले पन्नास टक्केही उच्च शिक्षणाकडे वळत नाही. मग या सगळ्याचे दृश्यफल काय तर प्रचंड प्रमाणात बेकारी. बेकारी आजची सर्वात गंभीर समस्या आहे. ही बेकारी कशी दूर करता येईल? त्यासाठी आपली प्रचलित शिक्षणपध्दती बदलायला हवी. आपण पारतंत्र्यात असताना इंग्रजांनी तयार केलेली शिक्षण पध्दतीच आजही कार्यान्वित आहे. कारकून निर्माण करणारी ही शिक्षणपध्दती आज कालबाह्य व निरुपयोगी ठरली आहे. हे लक्षात घेऊन आजची शिक्षणपध्दती बदलली पाहिजे. शिक्षणात व्यवसाय शिक्षण, धंदे शिक्षण या शिक्षणाचा समावेश करायला हवा. आज शिक्षणतज्ञ या दृष्टीने पावले टाकत आहेत, पण जितक्या जोमाने हे काम व्हायला पाहिजे तेवढे होत नाही. आज व्यवसायातही बहुविधता निर्माण झाली आहे, फक्त या व्यवसाय शिक्षणाची शालेय व महाविद्यालयीन अभ्यासाशी सांगड घातली पाहिजे. व्यवसाय शिक्षण म्हणजे वाढता खर्च हे काही अंश खरे आहे. पण योग्य नियोजन करून त्याला यशस्वी व्यावसायिकांची मदत मिळवली तर हे सोपे होईल. अशा प्रकारे शिक्षण घेऊन बाहेर पडणारा विद्यार्थी केवळ पदवीची पुंजळी घेऊन बाहेर पडणार नाहीत, तर खऱ्या अर्थाने स्वत:च्या पायावर उभा असेल, असे उदात्त कार्य जर या आजच्या विद्यार्थ्यांपुढे ठेवले गेले तर ही युवा पिढी अपार कर्तृत्व गाजवू शकेल.

प्राची जोशी
कला शाखा, चतुर्थ सत्र

ते प्रेम आता आटले

दिवेलागणीची वेळ झाली होती. पोरसातल्या त्या नाजूक जाईच्या फुलांच्या सुगंधाने सारं वातावरण सुगंधित झालं होतं. सुगंधा आपल्या नवऱ्याची वाट पाहात पडवीत बसली होती. बाहेर पाऊस पीरी-पीरी पडत होता. हळू हळू काळोख पसरत होता. तिने आतल्या खोलीत डोकावून भिंतीवर असलेल्या घड्याळात पाहिले. सात केव्हाच वाजून गेले होते. एरवी पंकज सात वाजण्याआधी घरी येत होता. पण आज त्याचा पत्ता नव्हता.

सुगंधाच्या मनात नाही नाही ते विचार येऊ लागले. 'त्यांना काय झालं तर नसेल?' किंवा 'वाटेत गाडी तर बंद पडली नसेल ना?' अशा अनेक प्रश्नांनी तिच्या मनात घेरा घातला. तिचं मन घाबरू लागलं, काळीज जोरजोरात धडधडू लागलं.

एरवी, जर तो उशीरा घरी यायचा असला, तर तो फोन करून तिला कळवायचा, नाही तर सकाळीच कामाला जाताना सुगंधाला सांगायचा.

या पूर्वी त्याने कधीही न सांगता एवढा उशीर केला नव्हता. ती पंकजला फोन करू लागली. पण त्याचा फोन बंद होता. सुगंधा परत परत फोन करत होती. पण पलीकडून 'तुम्ही डायल केलेला नंबर बंद आहे.' या व्यतिरिक्त तिला दुसरं उत्तर ऐकू येत नव्हते.

हळूहळू सुगंधा नवऱ्याच्या विचारात गढून गेली.

वातावरणात शांतता पसरली होती. काळ्याकुट्ट काळोखाने परिसर घेरला होता. अचानक फाटकाच्या आवाजाने ती शुध्दीवर आली. तिला समोरून कुणीतरी चालत येताना दिसला. ती घाबरली होती. तिनं घाबरत्या आवाजात विचारलं - "कोण आहे तिकडे?"

"अगं, मी आहे पंकज." समोरच्या व्यक्तीने उत्तर दिले.

तिने आत डोकावून घड्याळात पाहिले. दहा वाजले होते.

"आज तुला एवढा उशीर का झाला? उशीरा येणार होता तर मला फोन का केला नाही? तू ठीक आहेस ना? आणि असा ओला चिंब कसा झालास तू? अशा अनेक प्रश्नांचा वर्षाव सुगंधा पंकजवर करू लागली.

पंकजला ठीकठाक पाहून तिच्या डोळ्यातून सुखाचे अश्रू पाझरू लागले.

पंकजला तिच्या प्रश्नांचं उत्तर देता येईना. तो सुन्नपणे सगळे ऐकत होता. तो गप्पच राहिला.

"अरे मी तुला काही तरी विचारते, आणि तू असा गप्प का उभा आहेस?"

"काही तरी उत्तर दे."

"तुझ्या काळजीने इकडे माझा जीव जात होता." सुगंधा म्हणाली.

"काही नाही गं, असाच जरा एका मित्राकडे गेलो होतो."

"मित्राकडे गेला होतास तर मला एक फोन करून सांगायच नव्हतं का?"

"जरा काम होतं म्हणून, त्याच्याकडे गेलो होतो. कामाच्या तंद्रित फोन करायचा विसरून गेलो."

पंकज विषय बदलत म्हणाला, "चल मला आंघोळीला पाणी काढ, मला फार भूक लागली आहे." असं म्हणत तो आत खोलीत गेला.

पंकजने तिला जे काही सांगितले, ते तिला अजिबात खरे वाटत नव्हते. पण त्याने जे काही सांगितले ते मान्य करून ती त्याच्या मागे आत गेली.

पंकजची आंघोळ आटोपल्यावर तिनं ताटं मांडली. सुगंधा व पंकज जेवायला बसले. दोघांचही लक्ष जेवण्यात नव्हते. दोघांच्याही घशाखाली जेवण उतरत नव्हतं.

नेहमी हसत घरी येणारा पंकज आज उदास, दु:खी मनाने घरी आला होता. पंकजच्या चेहऱ्यावर उमटलेली कसली तरी चिंता साफ दिसत होती. त्याचं जेवण्यात लक्ष नव्हते. तो कसल्यातरी विचारात मग्न होता.

पंकज पलंगावर पडला, पण त्याला झोप लागत नव्हती. तो पुन्हा पुन्हा कूस बदलत होता. डोळे झाकले की डोळ्यापुढे 'ती' दिसत होती. आज ऑफिसमधून घरी येताना त्याला सुमन भेटली होती. कॉलेजमध्ये असतानाची त्याची जिवाभावाची मैत्रिण म्हणजे सुमन.

हळूहळू पंकजला आठ वर्षापूर्वीची सुमन आठवू लागली. तो तिच्या आठवणीत हरवून गेला.

अगदी चाफेकळीसारखी नाजूक, पाठीवर मोकळे सोडलेले लांब, काळेभोर तिचे केस, गोरी-गोरीपान सुमन त्याला आठवली. कॉलेजमध्ये असताना या दोघांच्या प्रेमाचे चर्चे मशहूर होते. एक दिवस सुमन जर त्याला भेटली नाही तर तो बेचैन व्हायचा. तासन तास बागेत फिरायचे. त्या दोघांना एकमेकांचा साथ आवडायचा.

सुमन नेहमी पंकजला म्हणायची, ''पंकज मी तुझ्यावर जिवापाड प्रेम करते. मला एकटीला सोडून कधीही कुठेही जाऊ नकोस.''

पंकज गरीब असल्यामुळे सुमनच्या आई-वडिलांना तो आवडत नव्हता. कॉलेजचे शिक्षण पूर्ण झाल्यावर पंकजला पुढील शिक्षणासाठी मुंबईला जावे लागले. सुमन आपल्या आई-वडिलांची नजर चुकवून पंकजला फोन करत होती. पण हे किती दिवस चालले असते? सुरुवातीचे दोन तीन महिने पंकजला सुमनचे फोन आले मग थोड्या महिन्याने फोन येणे कमी झाले. मग पुढे पुढे फोन येणे बंदच झाले.

याच संधीचा फायदा घेऊन सुमनच्या आई-वडिलांनी तिचं लग्न ठरवलं. हे लग्न तिच्या इच्छेविरुध्द झालं.

पंकज आपलं शिक्षण पूर्ण करून गावी परत आला, तेव्हा त्याला सुमनचं लग्न झाल्याचे कळले. त्यान तिचा शोध घेण्याचा प्रयत्न केला पण ती काही सापडली नाही.

पंकजवर जिवापाड प्रेम करणारी, त्याच्याशिवाय एक मिनिटही न राहणारी सुमन त्याला कुठे भेटलीच नाही.

पुढे पंकजच लग्न झालं. कालांतराने पंकज सुमनला विसरून जाण्याचा प्रयत्न करत होता. पण आज आठ वर्षानी अचानक सुमनला रस्त्याच्या बाजूला उभी असलेली पाहिलं आणि तिला जाऊन भेटावस वाटलं. पंकज आपल्या भावनेवरचा ताबा रोखू शकला नाही व तिला भेटायला गेला.

''सुमन, ओळखलं का मला?'' पंकजने सुमनला प्रश्न केला.

सुमन गडबडून गेली. आपल्या भावनांना सावरत ती म्हणाली, ''हो तुला कशी विसरेन मी, कसा आहेस?''

''तुझ्याशिवाय कसा असणार.''

पंकज तिला जवळच असलेल्या बागेत घेऊन गेला तो एकटक सुमनकडे बघत होता. ती पूर्वीची सुमन राहिलीच नव्हती. तिचं ते सुंदर रूप पालटून गेले होते.

पंकजला तिला खूप काही विचारायचं होतं पण विचारण्याची हिम्मत त्याच्यात नव्हती. तो टक लावून नुसता तिच्याकडे पाहात होता. त्या दोघांना कॉलेजमधल्या गोष्टी आठवू लागल्या.

सुमनशी बोलता बोलता चार-पाच तास कसे गेले ते त्याला कळलेच नाही.

सुमनचं बोलता बोलता लक्ष हातात असलेल्या घड्याळाकडे गेले. वेळ खूप झाला होता. ती गडबडून उठली.

''पंकज, येते मी, पुन्हा कधी तरी भेटू.'' असे म्हणून ती तेथून निघून गेली.

पंकज तिच्या पाठमोऱ्या आकृतीकडे पाहात तसाच उभा राहिला. तो विचार करत होता, ''हिच का ती माझ्यावर जिवापाड प्रेम करणारी, माझ्याशिवाय एक मिनिटही तिचं जात नव्हते, खरंच' हीच का ती सुमन? असा प्रश्न पंकजला पडला होता.

पंकजला काही केल्या झोप लागत नव्हती. सारखी तिची आठवण येत होती. ती भोळी भाबडी सुमन त्याच्या डोळ्यासमोर उभी राहात होती. पंकजच्या डोक्यात विचारांचे वादळ सुरू झाले होते.

प्रेम करणे हा गुन्हा नाही किंवा प्रेमाची आठवण काढणे हा ही गुन्हा नाही. प्रेम करणे हा मुळात मनुष्याचा स्वभावच असतो, आणि मुख्य म्हणजे कुठलाही माणूस स्त्री किंवा पुरुष आपलं पहिलं प्रेम कधीही विसरत नाही.

देवा-ब्राह्मणांच्या साक्षीने पंकजने सुगंधाशी लग्न केलं होतं. तो संसारात गुंतला होता. पण जेव्हापासून तो सुमनला भेटून आला होता तेव्हापासून त्याचं मन एका जागेवर स्थिरावत नव्हते पंकजला वाटत होतं की सुगंधाला सुमनबद्दल सर्व काही खरं खरं सांगून टाकावे. पण हे ऐकल्यावर सुगंधा पूर्णपणे कोसळून जाईल. या विचाराने पंकजचं काळीज एकदम धडधडू लागले. काय करावे ते त्याला सुचेनासे झाले. भूत आणि वर्तमानाच्या कचाट्यात तो सापडला होता.

रात्र सरत होती. पंकजच्या मनातील तळमळ अजून शांत झाली नव्हती. तो विचार करत होता. ''जर का मी सुगंधाला सुमनबद्दल खरे काय ते सांगितले नाही, तर मी तिचा अपराधी बनेन. मला तिच्याबरोबर संपूर्ण आयुष्य घालवायचं आहे. पण ह्याचबरोबर मी हे नाते खोटेपणाच्या आधारावर जपणार कसा?

सुगंधाबरोबर देवा-ब्राह्मणांच्या साक्षीने घेतलेली ती वचने मी कसा विसरू शकतो? मी तिला फसवत आहे. अशा अनेक प्रश्नांनी पंकजच्या डोक्यात घेराव घातला

सुगंधा पंकजशी एकनिष्ठ होती. कर्तव्य श्रेष्ठ की भावना याची निवड त्याला करणे कठीण होत होते. सुमन पंकजच पहिलं प्रेम, पण आता सुमन लग्न करून आपल्या संसारात गुंतली आहे. पण आपल्या सद्सद् विवेक बुध्दीचा विचार करून पंकजने पलंगावर पडल्या पडल्या मनामध्ये निश्चय केला की, सुगंधाला आपल्या पहिल्या प्रेमाबद्दल सर्व काही खरं सांगायचे. खरे बोलण्याचा काय परिणाम होणार याची चिंता न करता सुगंधाला सुमनबद्दल सर्व काही सांगायचं.

मनात निश्चय करताच हळूहळू त्याची बुध्दी स्थिर झाली. मनातील वादळ शांत होऊ लागले आणि नकळत न लागणारी झोपही त्याला लागली.

(सरकारी महाविद्यालय केपे आयोजित ना. भा. नायक कथास्पर्धेतील तृतीय क्रमांक विजेती कथा)

प्रियंका व्हि. सांगोडकर

झाड

मी आहे झाड. छान छान झाड.
माझ्या अंगावर पानंच पानं
फुलंच फुलं
फळंच फळं

माझे हात पोहचतात ढगाला
गुदगुदल्या होतात. हसतात ढग खुदुखुदु
न पाऊस पडतो भुरुभुरु
मुलं म्हणतात - ये रे ये रे पावसा
पाऊस आला मोठा.....

हं ऽऽ
पण काय झालं पोरांनो
दोन वर्षे झाली, पाऊस पडला थेंबभर

पाऊस पडला थेंबभर
माती झाली मणभर
बघा पोरीनो,
पाऊस झाला छोटा नि पैसा झाला मोठा

प्रियांका किंजले
द्वितीय सत्र, कला शाखा

'उद्ध्वस्त' कादंबरीतील उद्ध्वस्त गोवा

कवी बा. भ. बोरकर यांनी आपल्या गोव्याचं मनोहारी वर्णन अनेक कवितांमधून केले आहे. गोव्याच्या निसर्ग सुंदरतेच चित्रण आपल्या शब्दांत त्यांनी एकदम सरसपणे मांडले आहे. बा.भ. बोरकरांची ही कविता वाचताना आपल्या गोव्याचे चित्र आपल्या डोळ्यांसमोर येते. गोव्यातील कड्याकपारी मधून फुटणारे ते दुधासारखे दिसणारे पाण्याचे घट, तसेच आंब्याफणसांनी भरगच्च भरलेली मोठ मोठी झाडं, आपल्या डोळ्यासमोर येतात. तो फुलांचा सुवास, ती हिरवीगार वनश्री, डोळ्यांसमोर उभी राहते व मन शीतल करून जाते. गोव्याबद्दल पुढे ते म्हणतात उन्हाळ्यात खार वारा व पावसाळ्यात दारापुढे सोन्याचांदीच्या धारा पडतात. गोव्यातील ती लाल माती व निळे पाणी मन हरुन जाते. वाटतं की ही कविता पुन्हा पुन्हा वाचावी.

पण आता काळ बदलला. वर्षे सरत गेली. आपल्या गोव्यात अनेक बदल होत गेले. पूर्वी प्रिय वाटणारी ती गोव्याची भूमी आता अप्रिय वाटू लागली. सोन्यासारखा असलेला गोवा आता उद्ध्वस्ततेकडे झुकू लागला आहे. याची अनेक कारणे आहेत. पण मुख्य कारण म्हणजे अनेक ठिकाणी सुरू असलेले खाणव्यवसाय. या खाण व्यवसायाने सोन्यासारख्या गोव्याचे स्वरूपच पालटून टाकलं आहे. या उद्ध्वस्ततेची कल्पना. सुभाष भेंड्यांनी सुमारे २५-३० वर्षापूर्वी आपल्या ''उद्ध्वस्त'' या कादंबरीमध्ये दिली होती. 'उद्ध्वस्त' या कादंबरीत दत्तवाडी या गोव्यातील एका खेड्याचे चित्रण आले आहे. कादंबरीच्या प्रारंभी खेड्याच्या समृद्धीचे वर्णन येते आणि नंतर त्या गावाचे खाणव्यवसायामुळे उजाडलेले स्वरुप भेण्डे चित्रित करतात.

दत्तवाडी या गावात गरीब-श्रीमंत एकदिलाने राहत असतात. सण समारंभ, उत्सव, जत्रा सर्वजण मिळून मिसळून साजरे करीत असतात. मात्रीपुनव, धालो या कार्यक्रमात मनापासून सहभागी होतात. एक शांत, आनंदी अशा दत्तवाडीतील लोकांच्या जीवनाचे प्रभावी चित्रण भेण्डे करतात. नारळ, सुपारी, पपनस, तवशी अशा अनेक वृक्षसंभाराने डवरलेली दत्तवाडी या कादंबरीच्या सुरुवातीला येते. तसेच दत्तवाडीतील कुळागार व शेती यांचेही चित्रण कादंबरीच्या आरंभी येते. पण गावात खाणधंदा सुरू होताच गावाचे सारे चित्र पालटते. या खाण व्यवसायामुळे गावात अमाप पैसा येऊ लागला. गावात समृध्दी येत गेली.

पण ही समृध्दी कशी नकली आहे याचेही वर्णन भेण्डे करतात. या समृध्दीमुळे माणसं माणुसकीला पारखी होऊ लागली. कांतू देसायाच्या कुळागारात पिढ्यान पिढ्या काम करणारा विठू कुळागार सोडून खाणकामांवर जाऊ लागतो. दरवर्षी मोठ्या उत्साहाने साजरे होणारे उत्सव कसेतरी उरकले जातात. खाणकामाचा दुष्परिणाम निसर्गावरही होऊ लागतो. कुळागरं उजाडतात, नारळी, पोफळीची झाडे उघडी बोडकी दिसू लागतात. नारळा, फणसाची झाडे उन्मळून पडतात. लोखंडाच्या कणाचे थर जमिनीवर साचल्याने त्या नापीक होतात. कुळागरातील जमिनी सिमेंटसारख्या घट्ट होत जातात. आणि बघता बघता एक गाव उद्ध्वस्त होतो. दुभंगत जाणाऱ्या माणसांच्या परस्परसंबंधाचे चित्रण कादंबरीत येते. जगण्याचे संदर्भ बदलल्याबरोबर माणसांच्या भावनाही बदलत गेल्या. मूल्यकल्पना बदलल्या आणि अनैतिकतेला व्यवहारी प्रतिष्ठा प्राप्त होऊ लागली. याचे तपशीलवार चित्रण उद्ध्वस्त कादंबरीत येते. खाणीवर काम करणाऱ्या मुलींचे तारुण्य मुकादमाकडून लुटले जाते. दिवसाढवळ्या मुकादम गावातल्या तरुण्याताठ्या मुलींच्या अंगाशी झोंबतो. हे सारे गावातील लोक केवळ खाणीवर मिळणाऱ्या पैशाखातर सहन करू लागतात.

या साऱ्या गोष्टींच्या विरोधात रामनाथ उभा राहतो. गावातील तरुणांची त्याला साथ मिळते. पण खाणमालकापुढे त्याचे काही चालत नाही. रामनाथला वीस हजार रुपयांची

लाच देण्याचा प्रयत्न खाणमालक करतात. पण रामनाथ ते स्वीकारत नाही. रामनाथ ऐकत नाही हे पाहून खाणीवर ड्रायव्हर म्हणून काम करणाऱ्या इब्राहिमकडून रामनाथच्या अंगावर जीप घातली जाते, व खाणमालक आपला मार्ग मोकळा करतात.

खाणव्यवसायामुळे उद्ध्वस्त झालेल्या गोमंतकातील समाजजीवन आणि घसरलेली मूल्यव्यवस्था यांचे हृदयभेदक चित्रण सुभाष भेण्ड्यांच्या उद्ध्वस्त या प्रादेशिक कादंबरीमध्ये येते.

सुभाष भेंड्यांनी आपल्या कल्पनाशक्ती व लेखनकौशल्य वापरून खाणव्यवसायामुळे होणाऱ्या उद्ध्वस्त गोव्याचे चित्रण आपल्यासमोर ठेवले होते. तीस वर्षापूर्वी केलेली कल्पना सत्यात परिवर्तित झालेली आहे. या खाणव्यवसायामुळे गोमंतकातील जनता त्रासून गेली आहे.

खाणव्यवसायामुळे पर्यावरणावर अनेक दुष्परिणाम झाले आहेत. गोव्यात पोर्तुगीज काळापासून खाण उद्योग सुरू आहे. पण गेल्या काही वर्षात खाण उद्योग बेफाम झाला आहे. पूर्वी खाणव्यवसाय हा मर्यादित स्वरुपात होता. पण आता या उद्योगाचा विस्तार प्रचंड झाला आहे. त्याचे वाईट परिणाम ठळकपणे जाणवू लागले आहेत. या खाणव्यवसायामुळे हजारोंना रोजगार प्राप्त झाला. त्यामुळे आर्थिक समृद्धीही आली.

धुळीमुळे उडणाऱ्या लोहकणांचे थर जमिनीवर पसरल्यामुळे शेती, बागायती, नापीक बनल्या आहेत. खाणव्यवसाय सुरू झाल्यामुळे व त्यामुळे प्राप्त होणाऱ्या पैशामुळे ट्रकची संख्या बेसुमार वाढल्याने वाहतूक कोंडीची समस्या निर्माण झाली. या वाढत्या वाहतुकीमुळे रस्त्यावर अपघातांचेही प्रमाण वाढू लागले आहे.

हातात अमाप पैसा आल्यावर उद्ध्वस्त कादंबरीतील माणसांची मानसिकता जशी बदलली तशीच आजच्या काळातील लोकांची मानसिकता, मूल्यकल्पना बदलल्या. खाण पट्ट्यात धूळ प्रदूषण ही समस्या मोठ्या प्रमाणात आहे. हिवाळा व उन्हाळ्यात खाण पट्ट्यातील गावात धुळीचे साम्राज्य असते.

गोव्याचे भवितव्य काय? असा प्रश्न केल्यास उत्तर एकच. धूळ.....

प्रियंका सांगोडकर
बी. ए. कला शाखा

तिघी

आठवणीत सरले दिवस
तरी कळले नाही कधी
कारण, तुम्ही होता एकटे
व आम्ही होतो तिघी
सण वार सगळे केले
आनंद ही साजरा केला
पण तुमच्या आठवणीशिवाय
दिवस नाही मावळला
कारण तुम्ही होता एकटे
आम्ही होतो तिघी
गळत होतं घर, नव्हती
जागा झोपायला, वाटली नाही तरीही भिती,
तुमची स्मृती मनात होती.
एकटे होता तुम्ही, तिघी होतो आम्ही
कुटुंबाच्या चौकटीने बांधलो होतो आम्ही.

केतकी वा. मराठे
तृतीय वर्ष कला

निसर्गरम्य गोवा

''माझ्या गोव्याच्या भूमीत गड्या नारळ मधाचे''

या बा. भ. बोरकर यांच्या कवितेच्या ओळी प्रत्येक गोमंतकीयाच्या परिचयाच्या आहेत. या कवितेतून बोरकरांनी गोव्याचे सुंदर वर्णन केले आहे. आपल्या एवढ्या मोठ्या भारत देशात एक सर्वात लहानसा भाग या गोव्याचे वर्णन करताना पं. नेहरू म्हणतात की, Goa is like Pimple on the face of India. म्हणतात ना की ''मूर्ती लहान पण किर्ती महान.'' या उक्तीप्रमाणे गोवा जरी आकाराने लहान असला तरी भारतभर प्रसिध्द आहे. गोवा विविध गोष्टीसाठी प्रसिध्द आहे. उदा : पर्यटन स्थान, निसर्ग, समुद्रकिनारे, देवळे, चर्च, नारळाच्या बागा, काजू इ. गोव्याला परशुराम भूमी असेही म्हणतात. या भूमीला कला, संस्कृती आणि परंपरेची देणगीच लाभली आहे. गोव्यातल्या समुद्रकिनाऱ्यांची तर गोष्टच निराळी व त्यामुळेच बाराही महिने देशी-विदेशी पर्यटकांची इथे रांग असते.

अशा आपल्या निसर्गरम्य गोव्यावर पूर्वी अनेक राजवटी होऊन गेल्या. त्यात सर्वात जास्त काळ टिकले ते म्हणजे पोर्तुगीज. याच पोर्तुगीजांच्या तावडीतून मुक्त होऊन आज आपल्या गोव्याला ५० वर्षे पूर्ण झाली. या स्वातंत्र्य काळातल्या ५० वर्षात आपल्या गोव्यात अनेक लहान मोठे बदल घडले आणि अजूनही घडत आहेत. यात काही बदल चांगले घडले तर काही वाईट. नाण्याला ज्या प्रकारे दोन बाजू असतात. अगदी त्याप्रमाणेच आपल्या गोव्यात होणाऱ्या बदलांच्या दोन बाजू आहेत. एक चांगली तर दुसरी वाईट हल्लीच्या काळात गोव्यात जे बदल घडतात किंवा जे काही घडत आहे ते मनाला अस्वस्थ बनवतात. गोव्याबद्दलची लोकांची प्रतिक्रिया बदलू लागली आहे. रोज चोऱ्या, मारामारी या सारखे प्रकार घडतात. गोव्याची तरुणपिढी 'ड्रग्स' च्या आहारी जात आहे. गोव्यात येणारे पर्यटकही सुरक्षित नाहीत. दिवसेंदिवस भ्रष्टाचार वाढत आहे. हे सर्व पाहिल्यावर वाटते यासाठीच का आपल्या शूर वीरांनी गोवा पोर्तुगीजांच्या तावडीतून मुक्त केला होता?

खरंतर आपणा सर्वांसाठी ही लांछनास्पद गोष्ट आहे. कारण आपल्या गोव्यातील शूर क्रांतीकारी विरांनी गोव्याच्या मुक्तीसाठी आपल्या प्राणांची आहूती दिली, ही याच कारणासाठी का? आजचे गोव्याचे या अशा प्रकारचे दृष्य पाहण्यासाठी का? असा प्रश्न पडतो आणि त्यासाठीच हे चित्र बदलायला पाहिजे. उशीरा का होईना आपण हे चित्र बदलण्यासाठी प्रयत्न केले पाहिजेत आणि या एवढ्याच गोष्टी नाहीत यासारख्या कितीतरी गोष्टी गोव्याचे नाव उंचावण्याऐवजी खाली पाडण्यास कारणीभूत ठरतात.

''लाथ मारू तिथे पाणी काढू'' ही जिद्द प्रत्येकाने बाळगली पाहिजे. तर मग गोमंतक भूमी आपल्याला भरभरून देईल आणि नंतर असा हा निसर्ग संपन्न असलेला गोवा किती तरी प्रसन्न वाटेल, नव्या नवरीप्रमाणे हिरवा शालू नेसून चकचकीत रोषणाईने सजलेल्या गोव्याला बघून मन आनंदाने भरून जाईल, आपणाला गोव्याविषयी इतरांना सांगताना अभिमान वाटेल, मग आपण कुठेही जाऊन गर्वाने म्हणू, ''गोवा माझा सुखाचा!''

प्राची जोशी
द्वितीय वर्ष, कला

कला

सर्व मुलांमध्ये अनेक कला गुण असतात. पण ही मुले आपली कला लोकांपुढे व्यक्त करत नाहीत. कारण त्यांनी कधी ही संधी शोधली नाही, आणि संधी जरी मिळाल्यात ती कशी निपटून घ्यावी हे त्यांना कळत नाही. अशा मुलांनी कला शाखेतच शिक्षण घ्यावे हेच योग्य.

पुष्कळ मुलांच्या अंगामध्ये जे कला-गुण दडलेले आहे त्यांनी आपली कला देशातील सर्व नागरिकांसमोर व्यक्त केली पाहिजे. आपली ही कौशल्ये लोकांपुढे दाखवायची असतील तर त्यांनी कला शाखेमध्ये प्रवेश मिळवायला हवा. पण सर्व मुले विज्ञान शाखेला जास्त महत्व देतात, आणि विज्ञान शाखेमध्येच प्रवेश करतात. त्यामुळे आपल्या कला गुणांना वाव मिळवण्याची संधी ते मिळवू शकत नाही. ज्ञान व कला-गुण विकसित करण्याची संधी मिळते ते फक्त कला शाखेतच. जर कोणालाही आपला सर्वांगीण विकास करायचा असेल, तर त्यांना कला शाखाच उत्तम.

कला शाखेला तर 'ज्ञानाचं भंडार' असे म्हटले आहे. कारण देशाच्या, प्रदेशाचा आणि जगाचा इतिहास आम्हाला शिकायला मिळतो ते फक्त कला शाखेतच. इतिहासात ज्या चुका घडल्या त्या परत होऊ नयेत ह्या हेतूने हा विषय कला शाखेमध्ये शिकविला जातो. माणसाचं वागणं, विचार करणं हे सर्व मानसशास्त्र, कला शाखेत आहे. नागरीक म्हणून आपली मूलभूत कर्तव्ये, आपले अधिकार आपल्याला राज्य शास्त्र शिकवते. कित्येक असे विषय आहेत जे आम्हाला दैनंदिन उपयोगी पडतात. त्याशिवाय साहित्य, ज्याच्याशिवाय माणसाचं आयुष्य पूर्ण होत नाही. हे सर्व कला शाखेतच आहे.

ह्या तंत्रज्ञान युगात वैज्ञानिकांचा फार मोठा हातभार आहे. पण ह्या तंत्रज्ञान युगात समाजाला खऱ्या अर्थाने घडवायचे असेल तर कला शाखेलाही तेवढंच महत्व आहे.

निकिता कुंभार
द्विषीय वर्ष, कला

आमचा वड

वडामुळे शोभा गावाची
रस्त्याला माया पित्याची
गुराख्यांची दोस्ती वडाशी
खेळती लपाछपी त्याच्याशी
सलगी दोस्ती शाळकरीपोरांशी
पोरे खेळती वडाच्या पारब्यांशी
मंजुळ गाणी बाया गाती
भान विसरुनी वड देई छाया
लाल फुले फळे डहाळोवरची
तृप्तपणे फोडी पाखरांच्या चोची
वडावरची हिरवी पाने
घरची पत्रावळी होई त्याने

निकिता कुंभार
दुसरे वर्ष, कला

कविता

माझा प्रकाश माझ्या मनामध्ये
तुझा प्रकाश तुझ्या मनामध्ये
माझ्या मनात फूल
तुझ्या मनात पान
म्हणून तर आपली दोस्ती छान!

❖ ❖

आकाशात तारे
झोंबणारे वारे

कुडकुड कुडकुड थंडी
शेकोटीपाशी सारे

आकाश निळेशार
शांततेचा भार

कुणी जरा बोलले तर
आवाज होई फार

❖ ❖

जाईच्या पाकळीतुनी
वाऱ्याची झुळूक येते

पावसाच्या सरीतुनी
विजेची चमक येते

आंब्याच्या वनातुनी
कोकिळेची कुहू येते

आकाशाच्या तंबूतुनी
सूर्याची मैत्रीण येते

मनाच्या पडद्यातुनी
कविता ही सुचत जाते
कविता ही डोकावते.

प्रियांका किंजळे
कला शाखा, द्वितीय वर्ष

वादळ

आटपाट नगरात होता एक राजा
भला मोठा उदिम त्याचा, भली मोठी प्रजा
भिन्न धर्म, भिन्न जाती, होत्या तिथे नांदत
हेवे दावे कधीच नव्हते, नव्हते लोक भांडत
पैसा नावाचा राक्षस एकदा नगरात त्या आला,
त्यानेच सर्वांच्या नितीमतीवर घातला एकदम घाला
जिकडे तिकडे एकच ध्यास
जाऊ तिथे खाऊ घास.
सत्तेची मोठी हाव झाली आम जनता जाम झाली
सत्ताधाऱ्यांनी मठ रचले मठाधीपती होऊन बसले
पाव टाकून जनतेला, केक आपण खात बसले,
केक पाव पचवायची सवय पडली सर्वांना
भष्ट्राचार कशाला म्हणतात हेच कुणाला कळेना!

अण्णा नावाचे वादळ एकदा नगरात त्या आले
अन्न त्याग करून त्यांनी जनतेला जागवले
वादळ अजून घोंगावतंय, जनतेला जागवतंय
भ्रष्टाचार मुक्त करण्याची वाट तें पाहतंय
खरच असं झालं तर किती किती येईल मजा
राजा होईल प्रजा व प्रजा होईल राजा

(२०१२ मध्ये गोवा विद्यापीठात आयोजित कविता स्पर्धेत प्रथम पारितोषिक प्राप्त कविता.)

केतकी मराठे
तिसरे वर्ष, कला

उद्ध्वस्त गाव

होता एक गाव त्याचे छान होते नाव
निसर्गाने बहरलेला नात्यांनात्यांनी बांधलेला
सुख दु:खात साथ देत आनंदाची गाणी गात
समाधानी संपन्न असे वातावरण होते गावात.

कोणजाणे काय झाले, होत्याचे नव्हते झाले
दृष्ट झाली कहाणी गावाच्या उद्ध्वस्ततेची
निसर्गाच्या पडझाडीची माणुसकीच्या अंताची.

एकामागून एक सुरुंग लागले
बहरलेले डोंगर धक्क्याने फुटले
झाला एकच कलकलाट कोलमडला डोंगराचा घाट
लाल मातीचे लोट सुटले ढीगच्या ढीग उभे झाले.

शेती बागायती ओसाड झाली
कुळागरे नष्ट झाली
धुळीत सारे वैभव गेले
धुळीमय गाव झाले.

हाती पैसा सहज आला
माणुस माणुसकी विसरला
पैशांपुढे मुलांना चिरडून पुढे गेला
माणुसकी गेली, बागायती गेली
संपन्न गावाची रयाच गेली

सरकारच्या नावाने ओरडण्यांत काय अर्थ
उद्ध्वस्ततेत दडलाय माणसाचा स्वार्थ

प्रियांका सांगोडकर,
बी.ए.

स्वातंत्र्य अन् भ्रष्टाचार

स्वातंत्र्य स्वातंत्र्य काय राहिलंय आता?
परकियांकडून सुटून आपल्यांतच गुरफटलोय आता
नाही कोठे लोकशाही
नाही कोठे लोकसत्ता
आता फक्त आहे राक्षसांचीच सत्ता

इथे तिथे दिसते फक्त एकच ढोंग
जनतेच्या समोर घेतात नवं-नवं सोंग
नाही इथे न्याय, आहे फक्त अन्याय
आपलेच पोट भरण्यात जो तो गुंतलाय

पर्वा नाही येथे कुणाला कुणाची
जो तो पाहतोय स्वप्ने आपल्याच घराची
भुका इथे भुकेने आपला जीव सोडतो
चंगळ करीत श्रीमंत श्रीमंतीने माजतो

पैशापुढे नाही इथे माणसुकीची किंमत
मूल्याची पायमल्ली करण्याचीच हिंमत
जो तो पसरवतोय आपली झोळी
यात भरडतेय बिचारी जनता भोळी
भक्षकांच्या तोंडी नेऊन ठेवलंय शेळीला
विरोधाला कोणीही नाही तिच्या जोडीला

अशा स्वातंत्र्याला काय राहिलाय अर्थ?
जिथे आहे स्वत:च्याच माणसांचा स्वार्थ
बरी होती देवा सत्ता परकियांची
नको झाली दादागिरी आता स्वकीयांची

प्राची दामले
दुसरे वर्ष कला

जीवन कणाकणाने घडे

विद्यालय हे सगळे त्रिभुवन, विद्यार्थीपण हे आजीवन
त्यास न पुस्तक शिक्षक पदवी स्वयं श्रमाने सारे शिक्षण
ग्रंथान्तरिचे ज्ञानामृत जर जगण्या अपुरे पडे
भवतालीच्या जीवनकलहामधुनि घेऊ या धडे
जीवन कणाकणाने घडे ॥१॥

निश्चित समयी घडेल निश्चित, नियत ठिकाणी वस्तू सापडत
स्थलकालाचा असा भरवसा ज्याच्यायोगे होई अवगत
वळण असे जो देईल मजला तो सद्‌गुरु सापडे
भवतालीच्या जीवनकलहामधुनि घेऊ या धडे
जीवन कणाकणाने घडे ॥२॥

परस्परांशी घेईल जमवुन मना गवसणी मृदमधु बोलुन
उदंड वाचन मार्मिक लेखन जना जोडण्या करि आवाहन
कौशल्यांची अशा शिकवणी अवचित पदरी पडे
भवतालीच्या जीवनकलहामधुनि घेऊ या धडे
जीवन कणाकणाने घडे ॥३॥

मनी कणव अन् शरीर सक्षम, सेवाभावी तसा युध्दरत
प्रतिभेचा जणु निर्झर वाहत, निर्धारि व्रत करी अखंडित
निर्भय हसरा लोकजयिष्णू संकटास जो भिडे
भवतालीच्या जीवनकलहामधुनि घेऊ या धडे
जीवन कणाकणाने घडे ॥४॥

आठवणी

काय असतात आठवणी
कशा असतात आठवणी
आठवणी असतात सुगंधासारख्या,
हृदयात जपण्यासारख्या
आठवणी असतात सुख दुःखाच्या
कधी चिंब, कधी कोरड्या
आठवणी असतात शब्दांशिवाय
खूप काही बोलणाऱ्या
बाहेर वर्दळ असली तरी
मनात घर करून राहणाऱ्या
आठवणी असतात कधी
गालातल्या गालात हसवणाऱ्या
दुःख मनात ठेवून
स्फुंदून स्फुंदून रडविणाऱ्या
सारं जग सोबत असतानाही
त्यांच्यात हरवून जाण्यासाठी
अशा असतात या आठवणी
कधी गोड कधी कडू.

(परिक्रमामधून)

प्रियांका सांगोडकर

कोंकणी विभाग

- मांडावळ -

लेख

❖ आयचो तरणाटो १४४
❖ मनशांचे गूण १४५
❖ म्हारगाय/स्वप्नां १४६
❖ शिक्षक/मोग १४७
❖ दोन उतरां/धालो.... .... १४८
❖ म्हाका ताजी गरज/तूं मात आयलें ना..... .... १४९
❖ कॉलेज १५०
❖ दर्यावेळेर एक सांज १५१
❖ मनशाचें अस्तित्व ना जातलें काय कितें ? १५२
❖ गोंय - एक पर्यटन थळ १५३
❖ विद्यार्थी जिणेंत वाचनाचें महत्त्व १५४
❖ मनीस घडोवपांत संस्कारांचे म्हत्त्व... .... १५५-१५६
❖ हांव कोणांक नाका (नाटकुले) १५९
❖ हास्य विनोद १६०

कविता

❖ गोंय रडटा १४५
❖ मनीसपण १५१
❖ सवणें/झगडी (विनोद) १५२
❖ शून्य १५३
❖ दुकां / चार उतरां म्हजी / क्रिकेट मॅच (विनोद) १५६
❖ आई बाबा / मनशाचें मन १५७
❖ आमी पांचजणां १५८

आयचो तरणाटो

आवय भुरग्याक जल्म दिता. ल्हानांचो व्हड करता. ताचो सगळ्यो मागण्यो मान्य करता. बाबा पुता करून खेळयता आनी करतां करतां तोच भुरगो एक दीस आपल्या आवय बापायक घरा भायर काडटा. आज कालच्या जिणेंत अशेंच चलत आसा. जांव्यांक कुसकुटांवरीं करता. तांच्यानी सांगिल्ल्यो बऱ्या वायटाचो गजाली आयचे तरनाटे आयकनात, म्हणून आयचो जाणटेलो पिकलेल्या पाना वरी गळत आसा. वृद्धाश्रमांनी जाणट्यांचो आंकडो वाडत आसा. लग्न जावन घरांत आयिल्ली सून जाणटेल्यांची कटकट म्हण तांका घरा भायर काडटा. आवयन आपले सुनेची पळयल्लीं सपनां मातये भरवण जातात. बाबापुता करून वाडयल्ले पूत आयज आपल्या आवय बापायक घरा भायर काडपाक फाटी नात.

आयचे तरणाटे सगळें विसरत चल्ल्यात. तांका खबर ना, आयज तांचे आवय बापूय जाणटे जाल्यार फाल्यां तेंय जाणटें जातले म्हण. तांचींय भुरगी तांच्यावांगडा तसोच वेव्हार करतलीं म्हण. तशेंच आयचे तरणाटे व्यसनाधीन जाल्यात. सोरो, विडी, तंबाकू हांच्या जाळ्यांत अडकल्यात. त्या जाळ्यांतल्यान कोण सुटपाचो यत्न करीत जाल्यार, तें व्यसन तांकां सोडीना. आज कालच्या भुरग्यांक वायट संगत मेळिल्ल्याकारणान शाळेक आसतनाच पिवपाक सुरवात करता. ते आपल्या आवय बापायचें चिंतिनात. आपलो फुडार चिंतिनात. ''सोरो रोंट मेळटा थंय देंवचार वता.' तशेंच खंय सोरो, विडी, तंबाकू मेळटां थंय आयचे तरणाटे वतात. आवय बापायचें मात लेगीत आयकनात.

सोबीत सुंदर म्हणटात तें गोंय आयज नाडच जायत चल्लां. गांवातलीं कुटुंबां आयज शहरांत वचपाक लागल्यात. वचत थंय मिनाच्यो खणी जाल्या कारणान आयज एक एकल्याच्या दारांत चार चार ट्रक उबे आसात. पैशाच्या नादाक लागिल्ल्यान गोंयची सोबीतकाय आयचे तरणाटे इबाडूंक उठल्यात. हें आयज आमकां आडोवपाची गरज आसा. सगळ्यांनी एकठांय येवन हाचेर आवाज उठोवपाची गरज आसा.

तशेंच आयचे तरणाटे गोंयची संस्कृताय विसरत चल्ल्यात. पैलीं तेंपार कशें धालो, शिगम्यांक, फुगड्यांक नेट येतालो तशें आयज उरूंक नां. हें सगळे हळू हळू ना जायत चल्लां. आयज लोकांमदी एकचार उरुंक ना. वचत तो आपल्या बायल भुरग्यांची चिंता. पैशे मेळोवपाच्या नादाक लागून आयचो मनीस मनीसपण विसरत चल्ल्यात. खून दरोडे, आत्महत्या, सारकिले प्रकार वाडत चल्ला, हे सगलें आडोवपाखातीर आयज एकठांय येवन आवाज उठोवपाक जाय, आनी सगळें आडोवपाक जाय. सोबीत सुंदर गोंय राखूंक जाय.

श्वेता देसाय
दुसरें वर्स, कला

मनशांचे गूण

मनीसजात ही देवान रचिल्ली सगळ्या जिवांपासून वेगळी जात. मनीस हो फकत हाडां-मासांचोय न्हय तर तो बळीश्ट, चिंतपी, हुशार, उलोवपी, हात-पांय आशिल्लो जीव. मनशां भितर वेगळे-वेगळे तरेचे गूण आसात, जे दुसऱ्या जिवांभितर नात. हे गूण फक्त शारिरीकूच न्हय तर आंतरिक! मोग, दुस्वास, घमेंड, गर्व, दया आदी. हे गूण एका मनशाक दुसऱ्या मनशांकडेन मिसळपाक, एकचारान, समजिकायेन रावपाक तशेंच स्वताचे उदरगतेक आदार करतात.

मनशाच्या जल्मापासून नैसर्गीक रितीन हे गूण ताचे भितर आसतात, आनी व्हड जाता-जाता हे गूण व्यक्त जावपाक लागतात. पूण प्रत्येक मनशां भितर हे गूण वेगळ्या-वेगळ्या प्रमाणांत आसतात, आनी तांचेर मनशाचो स्वभाव अवलंबून आसता. हे गूण मनशाच्या स्वभावाक आकार दिता, रचयता. जेन्ना ह्या गुणांचेर मनीस क्रिया करता तेन्ना ते भावनांच्या रुपान व्यक्त जातात. मोगाळ, दयाळू, दुस्वासी, घमंडी आदी. मोग, दया, हुशार, प्रामाणिकपण, उदारताय, सत्य आदी हे बरे गूण. ह्या गुणांक लागून मनशाची सकारात्मक दृष्टी तयार जाता. तो जिवितांत केन्नाच निराश, दुखी जायना. आनी आपल्या भोंवतणी सुद्दां सकारात्मक उर्जा परसरायता. जाका लागून समाज ताचेकडेन आकर्षित जाता. तर दुसरे वटेन दुस्वास, घमेंड, तिरस्कार, नैराश्य, अप्रामाणिकपण, निर्दय हे वायट गूण. ह्या गुणांक लागून मनशाच्या जिवितांत रस, गोडसाण उरना. तो देंवचार जाता. ताचे भितल्लें मनीसपण मरता. मनीस-मनशाक वळखना. आपलो सुद्दां परको जाता. आनी मनशाच्या स्वभावाची उदरगत जावपाची सांडून तो शून्य आंकड्याचेर पावता. समाज ताका पयस-वेगळो दवरता.

पूण मनशांभितर बरे आनी वायट हे दोनूय गूण मिसळतात. तो पूर्णपणान बरो किंवा पूर्णपणान वायट असो आसना. पूण दर एकल्यान आपल्या बऱ्या आनी वायट गुणांमदीं फरक करुंक जाय. तांची जाण ताका आसूंक जाय. आनी जाता तितले बरे गूण आपणावपाचो प्रयत्न करुंक जाय. तेन्नाच मनशाचें आध्यात्मिक जिवीत गिरेस्त जावंक पावता.

राजवी दामोदर नाईक
दुसरें वर्स, कला

गोंय रडटा

गोंय रडटा
वांचय म्हाका वांचय
वायट व्यसनांच्या
दर्याच्यो ल्हारो
हांगा पाविल्यो दिश्टी पडटात

गोंय रडटा
वाचय म्हाका वाचय
खून, दरोडे, मारामारी
हांचो हांगा पावसच पडटा
गोंय रडटा, वांचय म्हाका वांचय

भ्रष्टाचारी राजकारणी
हांगासल्या लोकांक नाडटात
गोंय रडटा वांचय म्हाका वांचय
खाणींच्या हावक्याक लागून
गोंयच्या दोंगरांचेर कहर पडटा
गोंय रडटा वांचय म्हाका वांचय

आश्विनी जोग
दुसरें वर्स, कला

म्हारगाय

आयज काल म्हारगाय हो मोठो प्रश्न जावन आसा. म्हारगायेन गरीब लोक आपणाली सुटका कशी करुन घेतले ही चिंतपाची गजाल जावन आसा. ह्या म्हारगायेचें मोठे कारण म्हळ्यार आमचे मंत्री जे आपलेतरेन सरकार चलयतात. सरकारी लोक फकत आपणाल्या पोटाचे पळोवन घेतात, हेर सामान्य लोक कितें खातात, कशे तरेन आपणाल्या पोटाची भूक भागयतात हाचें तांकां कांयच पडलेलें ना. गरीब लोक तर रात-दीस परिश्रम करुन आपणाली भूक भागयतात. जो जोडपी आसा तो आपणाले पोटाक चिमटो काडून आपल्या कुटुंबाच्या लोकांची पोटां भरता. हे म्हारगायेचेर खंयचोच सामान्य मनीस हूं न्हूं सूं करिना. सगळे अन्याय, अत्याचार सहन करत रावतात आनी हे जे राजकारणी लोक आसता ते तांचो फायदो घेतात आनी असल्या विशयाचेर गंभीरतायेन विचार करनात. आपूण निवडून येवंक जाय म्हूण पयली साबार वचनां दितात, सगळे सारके करतले म्हूण आश्वासन दितात. पूण अखेरेक तांचे खरें रुप आमच्या दोळ्यांमुखार येता. ते जे कामां करतात तातूंत तांचो स्वार्थ आसता. भ्रश्टाचार करुनच तर सगळी सरकारी कामां चलतात. हे आमी लोक जाणा आसून सुध्दां वोगी रावतात. जर आमी सगळ्यांनी ह्या भ्रश्टाचाराचेर विरोध करत जाल्यारुच आमचो फुडार बरो जावक शकतलो. तशेंच आमचे मुखावेले पिळगेचें कल्याण जांवक शकतलें. देखून आमी सगळ्यांनी एकवटान-एकचारान रावन तांचो विरोध करुंक जाय. भारताचे जागृत नागरीक म्हूण जगूंक जाय, आनी आमचें कर्तव्य करीत रावंक जाय.

अंकिता नाईक
दुसरें वर्स, कला

स्वप्नां

स्वप्नां ही मनशान पळोवकच जाय. स्वप्नां म्हळ्यार आमची कल्पना. स्वप्नां ही दोन प्रकारचीं आसूं येतात. बरीं स्वप्ना म्हळ्यार ज्या स्वप्नांत आमकां जाय ते दिसता, ज्या स्वप्नानी उमेद, उमळशीक भरिल्ली आसता. देखीक आपणाक नवो ड्रेस, सेंडल हाडलां, आपूण पयल्या नंबरान बी.ए. पास जालां, आनी वायट स्वप्नां म्हळ्यार कोणाचोय एक्सीडेंट जाला, सुनामी, मरण आदी. एक एकदां वायट स्वप्नां विनोदीय आसतात. केन्नाय आमकां स्वप्न पडटा की आपूण खाटीवयल्यान सकयल पडपाचो आसा, सामको धडेक पावलां आनी इतले म्हणसर कच करुन दोळे उगडटात. पूण पळयल्यार आमी जमनीर न्हिदिल्लीं आसतात. केन्ना अशेंय स्वप्न पडटा कि परिक्षेचे दीस आसा. कोंकणी पेपराजाग्यार आमी हिन्दी अभ्यास करुन गेल्यांत आनी आमकां पेपराक कांयच कळना आनी इतल्यांत आमी अचकीत दोळे उगडटात आनी केन्ना याद जाता की परिक्षा तर सोंपली आनी हे तर स्वप्न पळयताली. अशें तरेचीं कितलीय स्वप्नां आसात जी आमच्या तोंडार हांसो हाडटा. पूण केन्नाय वायट स्वप्नां पडटात तेन्ना मनीस निराश जाता. ताका भंय दिसूंक लागता. पूण मनशान तरीसुध्दां स्वप्ना पळोवंक सोंडूक जायना. स्वप्नां पळयत रावंक जाय. कारण जो मनीस स्वप्नां पळयता तोच मनीस तीं साकार करुंक पावता. स्वप्न तर एक रोप कशें. ताका कितलें आनीक कशे उदक घालचें, ते आमचें हातांत आसता. मागीरच तें रोप झाडाचें रुप घेता आनी आमचे स्वप्न खरें करुन दाखयता. देखून बरीं स्वप्ना पळयात. तशेंच तांकां साकार करपाचें लक्ष थारायात आनी कठीण परिश्रम करात.

अंकिता नाईक
दुसरें वर्स, कला

शिक्षक

शिक्षक हे ह्या वर्तमान काळांतलेच न्हय, पूण इतिहासांतूय तांचे खूब म्हत्व आसा.

सगळ्यांत पयलीं आवय-बापायक आमी देवाचें स्थान दितात. म्हणून सर्गांत देव तशे संवसारांत आवय-बापूय आनी दुसरें स्थान आमी शिक्षकाक दितात.

आता शिक्षक ह्या उतराचो अर्थ असो आसा. शि-शिक्षण दिवप, क्ष-क्षमा करप, क-कर्तव्य निबावप.

अशा अर्थान तयार जाता शिक्षक शब्द. म्हळ्यार शिक्षण दिवपी, क्षमा करपी आनी कर्तव्य निबावपी. शिक्षक विद्यादान करता तें ताचे कर्तव्य, चंदन जशें आपूण झरून दुसऱ्यांक सुंगध दिता, तशेंच शिक्षक आपलें जिवीत झरोवन दुसऱ्यांक शिक्षण दिता. ताका हुशार करता. शिक्षक म्हळ्यार दर एकल्याच्या जिवितांतलो एक अमूल्य इश्ट.

जर ह्या समाजात शिक्षक नाशिल्ले जाल्यार कितें जावपाचें हाचो विचार केल्यार, आंगार कांटो फुलता. शिक्षकाची व्हडविकाय एका कवीन अशी केल्या,

'पेनान शाय ना तें
पेन बेकार,
समाजांत शिक्षक ना तो
समाज बेकार.''

रविना र. मठकर
पयलें वर्स, कला

मोग

ज्या कुटुंबांत मोग, नम्रता, भक्ती आनी सद्भावना आसता त्या घरांत सदांच देवाचो वास आनी आशिर्वाद आसता. मोगांत देव आसता. मोग सगळ्यांक दिवपाकूच जाय. मोगान सगळ्यांचे मन जिंकपाक शकता. सगळ्यांमदी सद्भावना तयार जाता. संवसारांत मोग हो शब्द सगळ्यांक एकठांय (एकजूट) रावपाक मदत करता वा उपयोगी पडटा. लोकांची सेवा करप, नित्य नेमान रावप हाचे वयल्यान लोकांचो देवावयलो भावार्थ, श्रध्दा, भक्ती समजून येता. सगळ्या मनशांभितर देव आसता. तेन्ना सगळ्यांनी नम्रतेन, माये-मोगान रावप म्हळ्यार देवाचें स्वरुप. देवाचे स्वरुप खरे वळखप हे सगळे गूण जर मनशामदीं आसले जाल्यार जिवित सार्थक जाता. मनीस जल्म मनशांक परत-परत मेळना. तो मेळपाक खूब कश्ट करचे पडटा. जिवितात सगळ्या कडल्यान चुको जातात, पुण सगळ्यांनी जर एकामेकाकडेन मोगान, आपुलकेन वागलें जाल्यार जिवित सार्थक जातलें. ताका लागून सगळ्यांनी एकामेकाकडेन माये-मोगान, आपुलकेन नम्रतेन रावपाचो प्रयत्न करपाक जाय. सगळ्यांची सेवा करप म्हळ्यार देवाची सेवा केली अशें समजप. आमी अशीं वागलीं जाल्यार आमचें जिवित सदांच सुखी उरतलें. आमचें कल्याण जातलें.

नम्रता पर्वतकर
पयलें वर्स, कला

दोन उतरां

जशी दरेकल्याक दोन उतरां सगल्यांक सांगन दिसता, तशीं म्हाकाय दोन उतरां सांगीन दिसता. वाचतल्याक अशें दिसतलें की हांव भाशण बरयतां. पूण ना, हांव भाशण बरयना. हांव फकत म्हजीं दोन उतरां तुमच्यामेरेन पांवोवक सोदतां.

हांव कॉलेजीत कला शाखेंत निमण्या वर्सांक आसां. सांगता आसतना खंत दिसता की, म्हाका आतां हें कॉलेज सोडून वचचें पडटलें. पूण म्हाका वचीन दिसना. आनीकय हे कॉलेजीत रावूं कशें दिसता. पुण ताका उपाय ना. तीन वर्सां कशीं गेली, तीं कळ्ळेंच ना. म्हजेकडेन सांगपा सारकिलें कायच ना. कारण हांव केन्ना लॅक्चर बंक मारुन पिक्चराक वचूंक ना, तशेंच दर्यावेळेर लेगीत केन्नाच वचूंक ना. पूण एक सांगीन दिसता कीं हांवें कॉलेजीतले दिस इन्जॉय केले. हांवें लॅक्चराक बसून आनी मेळटा तेन्ना शिवाजी महाराजांच्या किल्ल्यार इश्टांवांगडा बसून वेळ घालयलो. हांतूनच म्हाका कॉलेजीतलो आनंद मेळ्ळो. हींच म्हजीं ल्हानशीं दोन उतरां !

श्रध्दा तु. गावडे
तिसरें वर्स, कला

धालो.....

मांडार रात फुलयली मान्नी पुनवेची
सगळी रात जागयली धालांची
नाल्ल फोडून केली पुजा मांडाची
सख्याक साद घालून फांती घातली मानाची
देवदेवाची नांवां सुचयत घोळीत रावली पंगडांनी
कोणाकडेन हळद कुंकू..., कोणाकडेन विडो....,
कोणाकडेन तांदूळ.....
मागूंक एके हारीन भार येवंक बसल्यो रंभा कुदोंक
भुरग्यांनी केली सुरवात फुगड्यांची
फुगड्या वागडां जाली सुरवात फकाणांची
धोणशे पिल्ला, कचो करीत उमेद वाडली बायलांची
कोण जाली पिटुंक कारीण, कोण जाली भावीण
कोण जाली फुलकारीण, कोण जाली धाको गवळीण
एक एक संवगां करुन सगळी रात जागयली
चान्याच्या पिठ्ठावरी पातळ्ळयो पांच राती धालांच्यो
ल्हारा कश्यो लागल्यो उसकूंक फुगड्यार फुगड्यो
धालांच्यो......

चैताली च. गवडंळकर
तिसरें वर्स, कला

म्हाका ताची गरज

म्हाका ताची खुब गरज आसा. म्हजें जिवीत सुकें पडटा. धुल्ल सगळोच नाकांत भरला. हांव उमऱ्यार बसून ताची वाट पळयता. हांव एकलोंच न्हय. म्हज्या सांगाताक आमचीं झाडां-पेडां, शेतकार आपल्या शेतांत पीक रोवूंक आपली आशा आपल्या मनांत रिगून दवरता. सगळ्या लोकांक हाची खूब गरज पडल्या. ही गरज म्हळयार पावसाची.

शाळेंत वचपी भुरगीं पावसा उदकांत नाचूंक आनी खेळूंक आपली तयारी करता. तेच भशेन शाळेत वचपा खातीर सत्रेची आदी फुडें तयारी करुन दवरल्या. आमच्या हातान रोयिल्लीं झाडां आमच्या बागेंत सुकून बावल्यांत. सगळो जीव तांचो कोंसळ्ळां आमचे शेतकार जाल्यार ताची वाट पळयत आसात, केन्ना कांय येतलो हो पावस? पावसाच्या सपनांनी मन रंगयलां. कांय शेतकार वाट पळयत पळयत बेजार जावंक पावले. तांची जीण सुकी पडली. घरांत पयशे कशे येतले? बायल भुरग्यांचो खर्च कसो जातलो हे सगळें प्रस्न एकठांय जावन कांय शेतकारांनी बांयत उडी मारून आपलो जीव दिलो. पावस ना जाल्यार मनशाचें जिवित कोसळटा. इतलो उपयोगाचो पावस हो.

''शिरी शिरी पावसा, शिरी शिरी शिरी'' ह्या वळींनी भुरगी आपली खुशालकाय दाखयतात, जेन्ना एक पावसा थेंबो ताच्या आंगार पडटा तेन्ना.

पावसाची सगळ्यांक गरज, ही पृथ्वी पावसाची वाट पळयत आसा. कारण पावस ना जाल्यार पृथ्वी एकसुरी पडून जीण दुखी जाल्या.

फारिया फर्नांडीस
दुसरें वर्स, कला

तूं मात आयलें ना.....

त्या दिसा वडाकडेन राविल्लो हांव तुजी वाट पळयत
पुण बाकिबाबाल्या कवितेतल्या मोगिकेपरी आपलीं पायजणां
मंद-मंद वाजयत तूं मात आयलें ना.

तुज्या ह्या वागणुकेचेर अचळय आयलीं म्हज्या
दोळ्यांतल्यान दुकां,
पुण म्हज्या दोळ्यांतली दुकां पुसूंक तूं मात आयलें ना.

परतून वचचो हांव म्हणून सुर्यान लेगीत आपलो रख-
रख कमी केलो ना.
तुज्या मोगाखातीर हांवे म्हजो हट्ट सोडलो ना.
पूण म्हज्या मोगाची गोडसाण चाखूंक तूं मात आयलें ना

म्हज्या मोगाच्या हट्टांमुखार सुर्यान लेगीत मानली हार
आनी हळू-हळू परतूंक लागलो तो आपल्या घरा
सोपोवन रखरखाची ती दनपार

अदाशावरी म्हजी नदर तेळत रावली तुजी वाट
म्हज्या दुख्खान समरस जावंन भरुन व्हांवता न्हंयचो
काठ
पुण अजुनूय कळना म्हाका, कित्याक गेलें तूं पयस
फिरोवन आपली वाट.

म्हज्या प्रस्नांच्यो जापो दिवंक तूं मात आयलें ना
म्हज्या तोंडार सुखाचो हांसो फुलोवंक तूं मात आयलेंच
ना.

निकिता दि. शिरोडकर
दुसरें वर्स (कला)

कॉलेज

कॉलेज म्हणजे कितें आसता...? कोण म्हणटात... कॉलेज म्हणजे जंय आमकां फ्रिडम मेळटा..... लेकचर बंक करुन खंयच्याय वेळा आमका हेवटेन तेवटन भोवपाक मेळटा... अश्या प्रकारच्यो जापो कॉलेज विद्यार्थी दितात... ह्यो अश्या प्रकारच्यो जापो तांच्या मनांत आयल्याच कश्यो? हाचे एक मुख्य कारण म्हळ्यार टी. वी. जाका आमी 'इडीयट बॉक्स' म्हूण वळखतात. पूण केन्नाकेन्ना आमी त्या 'इडीयट बॉक्स' भशेन वागतात. आयज सगळ्या घरानी टी.वी हो आयला आनी आमी ताच्याफुड्यांत बसून ताजेर दाखयल्लें दृश्य पळयतात. हिंदी सिनेमा पळोवपाची आवड तर सगळ्यांकूच आसा आनी चड म्हळ्यार आमच्या आयच्या तरुण पिढीक...

त्या सिनेमांत ज्या तरेन 'मेक-अप' करून ३०-३२ वयांच्या हिरो-हिरोइनीक १७-१८ वयाची/वयाचो कॉलेज विद्यार्थी करतात... आनी फस्ट ऍन्ट्री हिरोची.. हेयर स्टायल 'शॉक' लायिल्यासारकें, कानांत कानांतली आनी एका हातांन रबराचीं कांकणा... वांगडा कॉलेज बॅग, आनी तातूंत एक चोपडी, आनी सगळ्यांत लागीचो इश्ट म्हळ्यार 'मोबाइल'. तशीच हिरोइन..... जीन्स. टी-शर्ट घालून.. त्या टी-शर्टाचो एक हात कापिल्लो... केन्नाकेन्ना दोनूय हात नासता, पायात हाय हिल्स, ओंठाक लिपस्टिक, डोळ्यात आयलायनर... अशा पध्दतीन ही दोगाय येता. आपल्या कॉलेजींत मागीर आपटतात कितें... आनी 'थेंक्स' म्हणतात कितें, वळख जाता कितें... मागीर इश्टागत... इश्टागत मोगान बदलता... आमचें लक्ष मात 'स्लोली सिनेमांत इतले केंद्रीत जालां कीं आमका दिसता कॉलेज म्हणजे अशेंच आसता!

आमचे पालक आमकां खूब शिकोवन आमी बऱ्या कामाक लागचे हाचेखातीर कॉलेजींत धाडटात.... अशे विद्यार्थी थोडेच आसता जे आपल्या ध्येया लागी पावतात. कॉलेज म्हणजे मजा न्हय. अर्थात हे आमचेर आदरिल्ले आसता की आमी कॉलेजीन मजा करपाक वतात काय शिकपाक...?

आयज आमच्या गोंयची कितें हालत जाल्या ती सगळ्यांकूच खबर आसा. विद्यार्थी वायट मार्गार चलत रावल्यात. तांची मानसिकता, चंचलपणा वाडत चल्ल्या आयज ते फक्त एकाच गजालीक चड महत्व दितात तें म्हणजें, 'फ्रीडम' आनी 'इनजॉयमेंन्ट'..... तांचेच भाशेत सांगपाचें म्हळ्यार कॉलेजींत शिकता आसतना आपलो 'गर्लफ्रेन्ड' वा बॉयफ्रेन्ड' हो आसुंकूच जाय. पुण आपल्या फुडाराचो मात ते विचार करिनात.

आयज आमच्या गोंयाक गरज आसा ती तरणाट्यांची तेखातीर आमी सगळ्यो गजाली सायडीक दवरुन आपले शिक्षणाचे वय, जें आमच्या हातांत आसा, ताजो बरे तरेन वापर करपाक जाय. शिक्षण हें एकदाच घेवपाक मेळटा. एकदा गेल्लो वेळ केन्नाच परत येना.

सुचित्रा गावडे
पयलें वर्स, कला

दर्या वेळेर एक सांज

गोंयचो दर्या तर भारता भायल्या तशेंच गोंया भायल्या लोकांक आकर्शीत करता. अशेंच हांव एक दीस सांजेच्या वेळार म्हज्या इश्टीणी वांगडा मार्टीन दर्या वेळेर गेल्लें. काय बरें थयचें तें वातावरण.

सांजेच्या वेळार दर्या देगेर चारुय वटेन सवण्यांचो आवाज कानार पडटालो. दर्या देगेवयलो तो वारो. वाऱ्यान दर्या देगेवयले माड उमेदीन धोलताले. माडार रेंदेर सूर काडपाक चडटालो. मळबांतलीं कुपां आपा लिपा खेळताली. मळबांतलो सूर्य. अशें दिसतालें की सूर्य अर्दो उदकांत बुडला. दर्या वयल्या ल्हारांचो जो धवो फुल्ल फेस येता तो पळोवन अशें दिसताले की मोती वयर सरला. दनपाराच्या वतान दर्या वयली रेंव चकचकता आनी अशें दिसता की सगळो दर्या भांगरान भरला.

दर्यांत पाय बुडयतकीच उदक थंड थंड लागतालें. दर्याची ल्हारां येतालीं आनी वताली. कोणेतरी अशें म्हळ्ळां की वेळ आनी ल्हारां कोणाकूच रावना. उदकांत उबें राविल्ल्यान दिसतालें की ल्हारां बरोबर हांवूय वता काय? दर्या देगेर ल्हान ल्हान भुरगीं रेवेंत खेळतालीं. तर कोण रेवेचीं घरां करतालीं. तांका पळोवन म्हाका म्हज्या ल्हानपणाची याद जाली. दर्यार लोकांची आनी पर्यटकांची गर्दी पळोवन जात्रा भरिल्या भशेन दिसताली.

दर्यार खारव्याचे नुस्तेंकाडपाच्यो जाळ्यो, पाटले आसले. तांचो दर्यांत नुस्तें हाडपाक वचपाचो वेळ जाल्लो. खारवी पोनेळ घेवन दर्यांत जाळें घालपाक वताले. थोडे खारवी नुस्त्याच्यो जाळ्यो घेवन दर्यार वयर येताले. वयर येतकच मोठे आनी बारीक नुस्तें वेंचून काडटाले. थंय मागीर कावळ्यांचो काव-काव आवाज जातालो. नुस्तेकारां नुस्तें व्हरपाक ताकतिकेन धावून येताली. थोडी पाटल्यांनी घालून विकूंक व्हरतालीं. ताजें-ताजें नुस्ते पळोवन म्हाका चांदी चकचकता कशें दिसतालें.

चलता चलता हातावयल्या घड्याळीचेर नजर गेली तर पळयत जाल्यार साडे सात जाल्लीं. त्याच बरोबर कपलार हात मारलो. दर्या वयली सांज कशी गेली कांयच कळ्ळें ना. सांज जाली तरी घरा वचपाची याद जाली ना. अशींच एक सांज तुमीय वचून पळयात. एक दर्या वयली सांज.

प्रियंजा कुंकळ्यैकार
पयलें वर्स, कला

मनीसपण

एका उतरान मनशाची
करपाक जाता पारख
पूण पारखुपाखातीर
जाय आपलेपणाची नदर

जे दिसतात ते सगले
आपलेच कशे दिसतात
जेन्ना मनीस दुख्खाच्या
चक्रीवादळांत सापडटा
तेन्ना त्या मनशाची माया
कितली ते कळटा

मनीस आपल्यापरीन
सगल्यांक मोग, माया
सर्वस्व दिता
पुण दुख्खांत आसतना मात
ताच्या म्हऱ्यांत येनासतना
सुखी मनशाच्या सोदांत भोंवता
संवसार हो असोच आसता
पयसुल्ल्यान पळयल्यार
सगलेंच बरें दिसता.

- श्वेता कोठारकर

मनशाचें अस्तित्व ना जातलें काय कितें?

आमच्या ह्या युगाक विचित्र युग म्हणपाक कांयच हरकत ना. कित्याक तर, हे पृथ्वेर जे कितें आशिल्लें तें ह्या मनशानी पेङ्ग्यार करुन उडयलां. अख्खें जग कितलें विचित्र दिसूंक लागलां. आमची धर्तरी रेडूंक लागल्या अशें दिसता. हाका कारण जावन आसा आमी मनशांच. अशेय दीस आशिल्ले जेन्ना आमचीं रानां उमेदीन सळसळटालीं. आमच्यो न्हंयो घसघशीत व्हांवताल्यो, जनावरां रानांत अभिमानान चलतालीं, सवणी उंच-उंच उडटालीं. एक काळ असोय आशिल्लो जेन्ना मनीस आनी सैम घट इश्ट आशिल्ले. पूण आतां खंय गेली ती इश्टागत? कोणाक याद तरी आसा ही इश्टागत?

मनशान आपल्या स्वार्थाक लागून जीं झाडां कापून उडयल्यांत तीं झाडां एक काळार आमच्या पुर्वजांक कामाक उपेगी पडल्यात. देशाची प्रगती जाल्यार आपलो मान आनी दर्जो वाडटा अशी समज आसा. म्हणून ते, हीं रानां हुमटून व्हडल्यो-व्हडल्यो इमारती आनी दुशीत द्रव्य आनी वायू सोडपी कारखाने उबे करतात. हे कारखाने उदरगत करतातच, ते भायर ताचे दुपेटींन प्रदुशणां वाडयतात. ह्या मनशाक अजून खबर ना की हेच कारखाने एक दीस तांचे गळे धरतले आनी तांका मारुन उडयतले.

ह्या कारखान्यांक लागून जें दुशीत द्रव्य भायर येता, तें सगलें न्हंयेंत मिसळटा आनी न्हंयो हाका लागून खराब जातात. ज्यो न्हंयो आमी पवित्र मानताल्यो त्यो सुद्धा दुशीत जाल्यात आनी हांचे परिणाम आमच्या फुडले पिळगेक भोगचे पडटले. तो दीस आता पयस ना. जेन्ना ही धरती फुटून नश्ट जातली आनी मनशाचें अस्तित्व ना जातलें.

प्रियंजा कुंकळ्येकर
पयलें वर्स, कला

सवणें

मळबांत
सवणें एक
मंद वाऱ्यार
उडत आसा

सवणे बाये
वाऱ्या वांगडा
उंच शिखर
गांठत आसा

सवणें भाना
विरयत जालां
मन-मेकळें
उडत आसा

मळब ल्हान
जायत आसा
सवण्या खोशी
वाडत आसा

मळबांत
सवणें एक
मंद वाऱ्यार
उडत आसा.

- श्वेता कोठारकर

झगडीं

दोन पिशे उलयतात

पयलो पिसो : तुका खबर आसा हिंदूस्तान आनी भारत हांची झगडीं जाली ?

दुसरो पिसो : खरेंच? तुका रे कोणें सांगलें ?

पयलो पिसो : राजून सांगलें म्हाका ।

दुसरो पिसो : तरी बरें जालें आमची इंडिया मदीं पडूना म्हूण.

नेहा नाईक
पयलें वर्स, कला

गोंय - एक पर्यटन स्थळ

सुंदर दर्याकुशीक, माडाच्या सावळेन, अरबी समुद्रादेगेर बशिल्लें भारताचे माणकुले गोंय सुरबूस नटलां. गोंयांत जायत्यो व्हांवत्यो झरी, पांचवेचार व्हड व्हड दोंगर, खळखळ व्हांवते धबधबे, पांचवीचार शेतां गोंयचे सुंदरतायेक आनीक सुंदर आनी प्रसन्न करता. हांगचीं शेतां, भाटां, कुळागरां, ही सैमीक सोबितकाय पळोवपाक पर्यटक गोंयांत येतात. तेभायर हांगा जायतीं देवळां आनी इगर्जी आसात.

पुराय संवसारांतले लोक गोंयांत आपल्यो सुटयो मनोवपाक येतात. ह्या माणकुल्या गोंयांतल्यो दर्यादेगो, हांगची सैमिक सुंदरताय, सांजेवेळार बुडटो सुर्य पळोवपाक आनी हांगचे नुसत्याचे जेवण पोट भरुन जेवपाक लोक रुचीन गोंयांत येतात. गोंयांतले लोक खूब मोगाळ आनी एकवटान रावपी आनी गोयांत आयिल्ल्या हेर सोयऱ्यांक व्हड मनान आपणायतात.

ह्या सगळ्या भायर गोंयात आनीक एक कितें तरी इतलें प्रसिध्द आसा, जें भायल्या लोकांक हांगासर ओडून हाडटा, ते म्हळ्यार कॅसिनो. कॅसिनो व्हड हॉटेलांत, व्हड बोटीनी आसा. तातूंत जायते पयशे लावपाचे खेळ खेळटात, जशे कि 'गॅम्लींग' जुगार. पयशेकार लोक हांगा लाखांनी पयशे लायतात आनी कोण जिंखता ताका सगळे पयशे मेळटात.

गोंयचो सरकार गोंयांत व्हड प्रमाणांत पर्यटक येवचे म्हूण खूब प्रमाणांत वावुरता. हांतूंत फायदो आनी लुकसाण आमचेंच आसा. पर्यटकांक लागून गोंयांत खूब पयसो येवंक पावला. हांका लागून गोयांत हॉटेलां व्हड प्रमाणांत वाडल्यात आनी हाचे खातीरुच गोयकारांक कामा मेळपाक लागल्या. हाका लागून गोंयची आदलीं देवळां आनी इगर्जी हांची संस्कृताय आनी गिरेस्तकाय उरल्या. फायद्या बरोबर लुकसाणूय आसा. भायले लोक हांगा येतात आनी ताका लागून गोंयची संस्कृती ना जायत वता. हाचो आमच्या तरणे पिळगेचेर खूब वायट परिणाम जांव येता.

अशे आसा हें आमचें माणकुलेशे गोंय. जंय कोणूय आयल्यार सदांच तोंडार व्हड खुशी घेवन वता. हांगा सगळी जाणां खूब मजा करतात. एकदां आयल्यार परत येवपाचे विचार तांच्या मनांत आसतात. गोंयात एक अंतराष्ट्रीय पर्यटन स्थळ जावपाचे सगळे गूण आसात म्हणूनच गोंय हे एक आदर्श पर्यटन स्थळ जावन आसा.

सोनिया जल्मी
पयलें वर्स, कला

शून्य

जेन्ना
तुज्यांतली वैचारीक नदर
ना जाता
तेन्ना,
तुजो तूंच
शून्य जाता
तरीय तूं
तूंच आसता
फक्त
तुज्यांतलें तें
मनीसपणूय
तुज्या सारकेंच
शून्य जाता.

श्वेता कोठारकर

विद्यार्थी जिणेंत वाचनाचें महत्त्व

विद्यार्थ्यामदीं हालीं सारको एक विचार घोळूंक लागला. तो म्हणल्यार शिक्षक शिकयता तें बरेभशेन शिकता, शिक्षक दितात त्यो नोट्स बरेभशेन पाठ करता, हेर परिक्षांक नापास जालो तरी, फायनल परीक्षेक पास जावन वयल्या वर्गांत वता तो 'विद्यार्थी' हो आमचेवरी विद्यार्थ्याचे जाल्लो समज सारको आसा? म्हाका दिसता ना.

इतल्यान आमचो सर्वांगीण विकास जातलो? हें गिन्यान आमकां आमच्या फुडाराक पुरो जातलें? ना. निखालस ना. आमी जगाचो अणभव घेतलेबगर आमच्या मनाचो, बुद्दिचो विकास जावप कठीण. जितले जितले आमी ह्या विशाल जगात वावुरतले, तितले आमी शिकिल्लें गिन्यान आमका अपुरें दिसतलें आनी तेखातीर आमी वाचन करप गरजेचें. जगावयल्यो खबरी कळटल्यो जाल्यार दिसाळीं नेमाळीं आनी हेर साहित्य विद्यार्थ्यांनी वाचपाकूच जाय.

आमकां गोंयकार भुरग्यांक एक मोठो फायदो आसा. ताका उण्यांत उण्यो चार तरी भासो येतात. चडशा भुरग्यांच्या शिक्षणाचे माध्यम इंग्लेज आसा. मागीर हिन्दी दुसरी भास म्हुण अनिवार्य, तिसरी भास म्हूण मराठी वा कोंकणी. मराठी जाणा आशिल्ल्याक मराठी बरोवंक आनी वाचूंक येता आनी मातशी मातशी समजताय बी. वाचनाची आवड आनी समजून घेवपाची उमळशीक आसली जाल्यार चार भासांचेर प्रभुत्व मेळोवंक येता. हें आमका गोंयकार भुरग्यांक इल्लेशे प्रयत्न केल्यार सहज शक्य आसा. हेर राज्यांच्या भुरग्यांक हें भाग्य मेळप कठीण. ह्या भाशांभायर आनीकय भासो शिकपाची आमची तयारी आसता. देखुनूच आमका भोवभाशी म्हणटात.

ही जी सुविधा आमकां मेळळ्या, ती आमी तिगोवन दवरुंक जाय. आज विज्ञानाच्या मळार नवीं नवीं संशोधनां जातात. मंगळासारख्या ग्रहाचेर मनशान संपर्क जुळयला. शनीच्या लागीच्या वाठाराचो अभ्यास चल्ला.

राजकीय मळाचेर कितें चल्ला, शिक्षणाच्या मळार किते किते सुधारणा चल्ल्यात, हें सगळे वाचनाबगर आमका कशें कळटलें? पाठ्य-पुस्तकांत तें आमका शिकूंक मेळना. तेखातीर आलायतें वाचन गरजेचें.

कांय लोक अधाशाभशेन वाचतात. मेळटा ते दिसाळें, मेळटा ते नेमाळें, मेळटा ते पुस्तक वाचतात. कित्याक? ते बेकार आसात म्हूण. तांचो वेळ वचना म्हूण? कसलो लाब आसता तांका? सगळ्यांत मोठो लाब गिन्यान संपादन. वाचनान व्यक्तिमत्वाचो विकास जाता. संवसारांतल्या घडणुकांची आमका ताजी ताजी खबर मेळटा. कथा काणयो असलें साहित्य वाचलें जाल्यार साहित्यीक जावपाचें बी आपलेभितर किल्लता. विचारांचे विस्तार कसो करचो, एकादे घडणुकेची कथा, काणी कशी करची हाचें गिन्यान मेळटा. नवे नवे विचार सुचतात. तातुंतल्यानुच लेखक जल्माक येतात.

कांय लोक आपल्या कामामुखार वाचनाक म्हत्व, दिनात. शिकपी भुरगे तर अभ्यासामुखार हेर वाचन आनी खंयचे? अशें म्हणटात. पुण तें सारखे न्हय. अभ्यासाचो बेजार आयिल्ल्या भुरग्यांनी वाचनाची संवय लावन घेत जाल्यार अभ्यासांत लेगीत गोडी लागून सहजपणान ते पास जावपाक पावतात.

आज दिसांतलो चडसो वेळ भुरगे टी.वी. मुखार बसून वगडायतात. काय चॅनलांचेर बरी म्हायती मेळटा, हांतूत दुबाव ना. पुण म्हायती दिवपी चॅनलांपरस भुरग्यांक सिरियलां दाखोवपी चॅनलांचे चड आकर्शण आसता. देखून वाचनात जे फायदे आसता, ते टी.वी. चेर मेळप कठीण. सगळे नदरेन विचार केल्यार भुरग्यांनी वाचनाची संवय लावन घेवप आनी आवड निर्माण करप गरजेचें.

क्रांतिका परब
पयलें वर्स, बी.ए.

मनीस घडोवपांत संस्कारांचे म्हत्त्व....

बऱ्या आनी उच्च जिणेची बुनयाद जावन आसा - मनशाचेर ल्हानपणासावन जावपी संस्कार.

मनशाचे जीणेच्या गरजांचो शेअर बाजार वाडत चल्ला. विज्ञानीक साधनां भारतांत वाडल्यांत. अशा ह्या उपाट भरिल्ल्या श्रीमंतीच्या वज्यापोंदा मनीसपण शेणत चल्लां. मनशाभितर खंयतरी रिकामेंपण जाणवता आनी हाचें कारण जावन आसा बऱ्या संस्काराचो उणाव (कमतरता)

जो मेरेन बरे संस्कार दिवपाचें मनीस मनार घेना, तो मेरेन बऱ्या सुंदर फुडाराची कल्पना आमी करुंक शकनात. संस्कार जिणेक संस्कारीत करुन एक बरी शिस्त हाडटात. संस्कार ही एक अशी मशाल जावन आसा जी जिणेंतलो काळखी मार्ग उजवाडान भरुन उडयता. संस्कार मनशाच्या विकासाची बुनयाद जावन आसा.

भारतीय संस्कृताय बऱ्या संस्कारांची संस्कृताय जावन आसा. कोणेतरी म्हळ्ळांय बी "संस्कृताय ही संस्कारांची आवय" एका आपउलोवपांत स्वामी विवेकानंदांनी म्हळां 'तुमी म्हाका संस्कारीत हजार आवयो दियात हांव तुमकां बरें राष्ट्र दितां" संस्कार दिवपाच्यो गजाली जायतेजाण करतात, पुण त्यो आचरणांत हाडप भोव कठीण आसा.

आपल्या भुरग्यांभितर बरे संस्कार रुजोवप हें दरेका आवय-बापायचें कर्तव्य जावन आसा, जापसालदारकी जावन आसा. शिक्षणाच्या मळार भुरग्यांच्या बौद्धिक उदरगतीचेर चड लक्ष आसता.

सगळ्याच आवय-बापांयक दिसता आपलीं भुरगीं बऱ्यांतल्या बऱ्या शाळेंत शिकचीं म्हणजे तांकां बरी गुणवत्ता मेळची, तांणी इंजिनियर वा डॉक्टर जावंचें. तांका बऱ्या पगाराची नोकरी बेगीनूच मेळची. एका संस्कृत कवीन म्हळा, "।।माता शत्रू: पिता वैरी या म्यां बालो न पठित:।।" म्हणजेच जे आवय-बापूय आपल्या भुरग्यांक शिकयनात ते ताचे दुस्मान. पुण आजचें हे शिक्षण भुरग्यांची सर्वांगीण उदरगत करुक शकतलें? ताच्या मदल्या षड्रिपूंक लगाम घालूक शकतलें? ताच्या मदल्या प्रस्नांक पुस्तकी गिन्यानांतल्यान जाप मेळप शक्य ना. आवय-बापायच्या लापरवायेन भुरगी संस्कारहीण जायत चल्ल्यांत. आपलेपणाची भावनाच सोंपत चल्ल्या. भुरग्यांची सहनशिलता कमी जायत चल्ल्या.

आज जण एकल्यान आपलीं कर्तव्यां, जापसालदारकी जाणून घेवपाची नितांत गरज आसा. आदल्या तेंपार रासवळ कुटुंबांत आजो-आजी नीतीमत्तेच्यो, शौर्याच्यो काणयो सांगून भुरग्यांभितर नीतीमत्ता, स्वावलंबन, आनी हेर बऱ्या मुल्यांची रुजवण करतालीं. सान भुरग्यांच्या बाल मनाच्या नितळ कोरे पाटयेर सुंदर जिणेच्या संस्कारांच्यो ह्यो रेघो जिवीतभर ताका निर्मळ, पवित्र, आदर्श जीण जियोवपाक प्रेरीत करताल्यो.

पुण आज रीतूच बदल्ल्या. संस्कार शेणल्यात. भुरग्याचें भुरगेंपण शेंणलां. भुरगे जल्मल्याउपरांत आवय भुरग्याच्या हातांत खेळणें दिवपा बदला मोबायल दिता. आनी टि.व्ही मुखार भुरग्याक बसोवन आपूण निश्चिंत जातात. असल्या मोबायल, टि.व्ही. च्या माध्यमांतल्यान जाल्ले संस्कार भुरग्यांच्या जिवीताची वाट लायतात.

ल्हान भुरग्यांचे जिवीत कोऱ्या कागदावरी आसता. त्या जीवनरुपी कोऱ्या कागदाचेर आवय जे शब्द बरयता

तेंच भुरग्याचें भविष्य घडयता, अशें म्हळ्यार अतिताय जावची ना. मनोविज्ञानिकांचे अशें स्पश्ट मत आसा की सुरवेच्या ५ ते ६ वर्साचे जिणेंत भुरगो जितलें शिकता आनी आपणायता तितलें पुराय जीवितांत इतले बेगीन शिकूंक शकना. जर फुडल्या पिळगेक सुसंस्कारीत करपाक जाय तर सुरवेक सावूनच संस्कार दिवप भोव गरजेचें आसता.

पाळणाघरां आनी वृध्दाश्रम जाता तितले कमी करूंया. भुरग्यांचेर बरे संस्कार करपाक तांका रामायण, महाभारत, आमच्या देशाचे सुटके झुजारी आनी आदर्श समाज सेवक हांचेविशीं ल्हानपणासावनूच म्हायती दिवंया. तांचेर बऱ्या गजालींचो शिंवर घालून बरो मनीस, बरो समाज आनी बरो देश, घडोवपाचो यत्न करूंया.

पुजा शेट
पयलें वर्स, कला

चार उतरां म्हजीं

कितल्या वर्सांनी तुका
इतल्या लागींच्यान पळयलें
क्षणात सरलेलें आयुष्य
दोळ्यांत उभें रावलें

तू परत मेळ्ळो आनी
आता जगूं कशें दिसलें
बावलेल्या मनाक
भायर पडुशें दिसलें

आमच्याच मोगाक किद्याक
वनवास भोगचो पडलो?
आमच्याच मोगाचो निकाल
देवान असो किद्याक लायलो?

केन्नांय जाली चुकून उमेद
तरी हांसपाक जमलें ना
सोसलेलें आयुष्य येता
रोकडेच दोळ्यामुखार धांवत

नेहा नाईक
पयलें वर्स, बी. ए.

दुकां

तुजीं
दुकां पुसपाक
हांव
मुखार सरलें
आनी
म्हजे हात
मोटवे पडले

- स्वेता कोठारकर

क्रिकेट मॅच

एकदां भारताचो आनी पाकिस्तानाचो कॅप्टन उलयतात.

पाकिस्तानाचो कॅप्टन : कितें रे? तुमच्या भारतांत खंयच्याय ग्रावंडार पळय सारकें तण नाच.

भारताचो कॅप्टन : तूं म्हाका एक सांग, तुमी हांगा खेळपाक आयल्यात काय चरपाक?

नेहा नाईक
पयलें वर्स, बी. ए.

आई बाबा

दोगांय तुमी रावलीं
पळयत म्हाका आयकुपाक
म्हजो पयलो आवाज

रडटा तो आवाज आयकून
जीव तुमचो धादोसलो
फुल्लो हांसो तुमच्या मुखामळार

ल्हान आसताना आयकुपाक
रावली तुमी, मम्मी, डॅडी
हें उतर म्हज्या तोंडातलें.

रातीचे दीस केले
कश्ट त्रास सोसले
वाडयले तुमच्या मोगान

वायट बऱ्याक सांगात दिलो
कश्टाक फुडो करपाक तुमी शिकयले
समजावन तुमच्या मोवाळ गोड उतरान

जिवीतांत तुमचो सांगात मेळटा
फुडें सरपाक आदार दिता, कारण
तुमीच म्हजी मोगाची देवान दिल्लीं
"आई बाबा"

श्वेता नाईक
पयलें वर्स, बी. ए.

मनशाचें मन

दिसता म्हाका सुकणें जावचें
पिंजरो सोडून वाऱ्यार उडून वचचें
दिसता म्हाका बेबो जावचें
तडेक बसून उदकांत पेवून वचचें
मनशाचे मन कितें ? आयज चिंतता हे
फाल्यां चिंतता तें
मनशाच्या मनाक करुंक दिसता जायतें
पूण इबाडटा करुंक दुरुपेग ताचो
दीस रात चिंतता फाल्यांचें
पूण कित्याक चिंतिना आयचें
मनशाचें मन कितें, आयज चिंतता हे, फाल्यां चिंतता तें
मनशाच्या मनाक आसा किंमत जायती
पूण मनीस घेना ताचो फायदो
खावपाक पिवपाक सोदता बसून आयतो
आनी अशे तरेन पाळीना आपलो कायदो
मनशाचे मन कितें, आयज चिंतता हें
फाल्यां चिंतता तें !!!

रविना र. मठकर
पयलें वर्स, बी. ए.

आमी पांचजणां

कॉलेजींतल्या वाठार
भोंवता आमी पांचजाणा
एकमेकाच्या सांगातान
रावता आमी पांचजाणां ।।१।।

लेक्चर आमी केन्नाच मारीना बंक
पुण किल्ल्याच्या सांगतान
मारता आमी एकमेकांक टोन्ट ।।२।।

आमच्यामदीं आसा चैताली
खबर आसता ताका सगळ्यो गजाली
आमच्या मदी आसा मिनाक्षी
आमी म्हणटा ताका मिनाकुमारी ।।३।।

आसा एकली पल्लवी
सदाच सांगता गजाली
कोण कसो, Tom & Jerry
मागीर सुषमा म्हणी
अब मेरी बारी ।।४।।

आता आयली म्हजी पाळी
ताका लागून सांगता
तुमका म्हजी काणी
म्हजें नाव श्रध्दा सबुरी
सगळीं म्हणटा तू कैसी बिमारी ।।५।।

अशी आमी पांचजाणां
रावता आमी
वांगडा-वांगडा
अशी आमी पांचजाणां ।।६।।

श्रध्दा गावडे
तिसरें वर्स, कला

नाटकुलें

हांव कोणांक नाका

सुरेखा : (एका पायान अपंग आशिल्ली वर्सा १०-१२ चे चली हाताक कुबडी. कुबडेच्या आधारान रंगमाचयेर येता)

सुरेखा : ह्य! हांव कोणांक नाका. सगळीं नातीं खोटीं. सगळें फट. टॉमीकडे पळयात ताज्या गळयात रुप्याचो पट्टो, ताका भोवणीकरपाक कार, निदपाक गादी, गाडीयेन फुडल्या सीटार डॅडीचे मांड्येर बसून हांव कोणांक नाका.

डॅडी? तोय भी बोलसांतले पयशे चोरल्याचो आळ घालो म्हजेंर. हांव चोर? परते परते सांगले हांवे चोरी करुंक ना, सोपूतलेगीत घेतलो पूण ना. उरफाटें ताणें म्हाका मारलें. या घरांत कुत्र्याक मान आसा पूण हांव, हांव तांच्या दोळ्यामुखार लेगीत नाका. हांव कोणाक नाका. हाव तांचे पंगतीक ना, म्हजें ताट वेगळें, ग्लास वेगळो, सगळें वेगळें. आतांमरेन खूप सोंसलें. खूप भोगलें. आतां कितें हांव ल्हान आसा, खऱ्यानीच मम्मीन म्हाका केन्नाच वेगेत मांड्येर घेतलेना. म्हाका हात लायना ती, मारता पयस रावून बडयानीं. दळदीरे दळदीरे म्हूण जप करता तो म्हज्याच नावाचो. खरेंच हांव कोणाक नाका. हांव कुड्डेजावन कुड्याकूच आवडताले? आता किते करू. दोरी तुटिल्या पंतगावरी गत जाल्या म्हजी. हांव फुटक्या नशिबाचे. हांव जन्माक आयले त्या दिसामेरेन मायेचो पास तोडून व्हडयलो. म्हजी मनसाच म्हाका उदकान पळयता. कुड्डी-कुड्डें. श्रध्देचेर जगपी हांव म्हाका न्याय, देवाच्या दरबारान मेळटलो. हांव कोणाक नाका. देवा म्हाका शकत दी. हांव येता तुज्यालागी. आता अशेंच करप. हो निमाणो नमस्कार (इतल्यान एकूच मोठो आवाज आनी एकूच किळांच) पडदो बंद.

शरिया मुल्ला
दुसरें वर्स, कला

हास्य विनोद

शिक्षक : किते रे राजू पेपर कठीण आसा?
राजू : ना सर.
शिक्षक : जाल्यार विचार कसलो करता ?
राजू : सर हांव याद करपाचो यत्न करतां, खंयच्या बॉल्सांत खंयच्या प्रश्नाचें उत्तर आसा तें.

●●●

पयलो कैदी : कितली वर्सा रे ?
दुसरो कैदी : पांच वर्सा
पयलो कैदी : कसलो गुन्यांव
दुसरो कैदी : जनता बँक लुटली म्हूण, आनी तूं ?
पयलो कैदी : धा वर्सां
दुसरो कैदी : कसलो गुन्यांव
पयलो कैदी : हांव त्या जनता बँकेचो मॅनेजर आशिल्लों.

●●●

राम : श्याम हालीं तुजे केंस कित्याक गळटात ?
श्याम : टेन्शनान
राम : कसल्या?
श्या : केंस गळपाच्या

●●●

वेटर : सायब, हे चमचे तुमी बोल्सांत घालताना हांवें तुमका पळयलां.
गिरायक: डॉक्टराची ऑर्डर
वेटर : म्हळ्यार
गिरायक: हे पळय म्हज्या वखदाचे बाटलेर तांणे किते बरयलां तें. 'जेवल्या उपरांत दोन चमचे घे?'

●●●

गुरुजी : भुरग्यांनो, मळबांत नखेंत्रां कितलीं आसात?
विद्यार्थी : एक कोटी, सव्वीस लक्ष, पासष्ट हजार.
गुरूजी : तातूंत किदे चुकलें जाल्यार ?
विद्यार्थी : जाल्यार तुमीच मेजून पळयात.

संग्राहक
वैष्णवी च्यारी
पयलें वर्स, कला